वृन्दकविकृत

वृन्दसतसई।

श्री ५ युत डुमरांव देशाधिश महाराज सर

राधाप्रसाद सिंह

देव बहादुर के० सी० आई० ई०

की आज्ञानुसार

दीवान राय जयप्रकाश लाल बहादुर ने

छपवाया।

"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर।

साहिबप्रसाद सिंह ने छाप कर प्रकाशित किया।

१८९०.

वृन्दसतसई।

दोहा।

श्रीगुरु नाथ प्रभाव तें, होत मनोरथ सिद्धि।
घन तें ज्यौं तरु बेलिदल, फूल फलन की वृद्धि ॥ १ ॥
किये बृंद प्रस्ताव के, दोहा सुगम बनाय।
उक्ति अर्थ दृष्टांत करि, दृढ कै दिये बताय ॥ २ ॥
भाव सरस समझत सबै, भले लगैं यह भाय।
जैसें अवसर की कही, बानी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥
नीकीयै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसें बरनत जुद्ध मैं, नहि सिंगार सुहात ॥ ४ ॥
फीकीयै नीकी लगै, कहियै समैं बिचारि।
सब कौ मन हरखित करैं, ज्यौं बिवाह में गारि ॥ ५ ॥
रोगी अवगुन ना गनत, यहै जगत की चाल।
देखौ सबैंही श्याम कौं, कहत ग्वाल सब लाल ॥ ६ ॥
जो जाकौं प्यारौ लगै, सो तिहिं करत बखान।
जैसे विष कौं विप्र भखीं, मानत अमृत समान ॥ ७ ॥
जो जाको गुन जानही, सो तिहिं आदर देत।
कोकिल अंबहि लेत है, काग निबौरी लेत ॥ ८ ॥
अन उद्यमही एक कौ, यौं हरि करत निबाह।

ज्यौं अजगर भख आनि कै, निकसत वाही राह ॥ ९ ॥
हलन चलन की सकति है, तौलौं उद्यम ठानि ।
अजगर लौं मृगपति बदन, मृगन परतु है आनि ॥१०॥
कहा होय उद्यम किये, ज्यौं प्रभुही प्रतिकूल ।
जैसें निपजे खेत कौ, करै सलभ निरमूल ॥११॥
जाही तें कछु पाइयै, करियै ताकी आस ।
रीते सरवर पै गये, कैसे बुझत पियास ॥१२॥
जो जाही कै ह्वै रहै, सो तिहिं पूरे आस ।
स्वाति बूंद बिन सघन में, चातक मरत पियास ॥१३॥
गुनही तऊ मगाइयै, जो जीवन सुख भौन ।
आग जरावत नगर तऊ, आग न आनत कौन ॥१४॥
रस अनरस समझै न कछु, पडै प्रेम की गाथ ।
बीछु मंत्र न जानइ, सांप पिटारे हाथ ॥१५॥
कैसे निब है निबल जन, कर सबलन सों गैर ।
जैसें बस सागर विषै, करत मगर सों बैर ॥१६॥
कीजे समझ न कीजिये, बिन बिचारि बिबहार ।
आय रहत जानत नहीं, सिर कौ पायन भार ॥१७॥
दीयौ अवसर कौ भलौं, जासों सुधरै काम ।
खेती सूखे बरसवौ, घन को कौने काम ॥१८॥
अपनी पहुँच बिचारी कैं, करतब करियै दौर ।
तेते पांव पसारियै, जेती लांबी ठौर ॥१९॥

पिसुन छल्यौ नर सुजनसों, करत बिसासन चूकि ।
जैसें दाध्यौ दूध कौ, पीवत छाछहि फूंकि ॥२०॥
प्रान तृखातुर के रहैं, थोरे हूं जलदान ।
पीछे जलभर सहस घट, डारे मिलत न प्रान ॥२१॥
विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावै कौन ।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यौं पंखा की पौन ॥२२॥
बनती देख बनाइयै, परन न दीजे खोट ।
जैसी चलै बयार तब, तैसी दीजे ओट ॥२३॥
ओछे नर की प्रीति की, दीनी रीति बताय ।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घट जाय ॥२४॥
अन मिलती जोइ करत, तांही कौ उपहास ।
जैसें जोगी जोग में, करत भोग की आस ॥२५॥
बुरे लगत सिख के बचन, हिये बिचारौ आप ।
करबे भेखज बिन पियै, मिटै न तन कौ ताप ॥२६॥
बडे बडेन कौं दुख हरत, पैन नीच यह थाप ।
घन मेटत पै ना सरित, गिरबर ग्रीषम ताप ॥२७॥
गुरुता लघुता पुरुष की, आश्रय बसतें होय ।
करी बृंद में बिंध्य सौ, दरपन में लघु सोय ॥२८॥
रहे समीप बडेन के, होत बडौ हित मेल ।
सबही जानत बढत है, बृक्ष बराबर बेल॥२९॥
उपकारी उपकार जग, सबसों करतप्रकास ।

ज्यौं कटु मधुरे तरु मलय, मलयज करत सुवास ॥३०॥
होय बडेरुन हूंमियें, कठिन मलिन मुखरंग।
मरदन बंधन छत सहत, कुच इन गुननि प्रसंग ॥३१॥
कहूं जाहु नाहिन मिटत, जो बिधि लिख्यो लिलार ।
अंकुस भय करि कुंभ कुच, भये तहां नख मार ॥३२॥
बिधि रूठै तूठै कवन, को करि सकै सहाय ।
बनदव भय जल गति नलिन, तहँ हिम देत जराय ॥३३॥
प्रेम पगत बरजी न क्यौं, अब बरजत बेकाज ।
रोम रोम बिष रमरह्यौ, नाहि न बनत इलाज ॥३४॥
फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्यौपार ।
जैसे हांडी काठ की, चढ़ै न दूजी वार ॥३५॥
करियै सूख कौं होत दुख, यह कहौं कौंन सयान ।
वा सौंनि कौं जारियैं, जासों टूटे कांन ॥३६॥
नैना देत बताय सब, हिय कौ हेत अहेत ।
जैसें निरमल आरसी, भली बुरी कह देत ॥३७॥
आति परचै ते होत है, अरुचि अनादर भाय ।
मलयागिर कौ भीलनि, चंदन देत जराय ॥३८॥
सो ताके अवगुन कहै, जो जेहि चाहै नाहिं।
तपत कलंकी विष भर्यौ, बिरहिन ससिहि कहाहि ॥३९॥
सुखदाइयै देत दुख, सौ सब दिन कौं फेर ।
ससि सीतल संजोग में, तपत बिरह की बेर ॥४०॥

बिधि के बिरचे सुजन हूं, दुरजन सम ह्वै जात ।
दीपहि राखै पवन तें, अंचल बहै बुझात ॥ ४१ ॥
जासो जैसौ भाव सौ, तैसौ ठानत ताहि ।
ससिहिसुधाकर कहत कोउ, कहत कलंकी आहि ॥४२॥
आप बुरे जग है बुरौ, भलौ भले जगजानि ।
तजत बहेरा छांह सब, गहत आंब की आनि ॥४३॥
सौ जु सयाने एक माति, यह कहवत है सांच ।
काचहि पांच कहै न कोउ, पांचहि कहै न कांच ॥४४॥
भले बुरे सब एक सो, जौ लौं बोलत नांहि ।
जान परतु है काक पिक, ऋतु बसंत के मांहि ॥४५॥
भाव भाव की सिद्धि है, भाव भाव में भेव ।
जो मानो तौ देव है, नहीं भीत कौ लेव ॥४६॥
निरफल श्रोता मूढ पै, कबिता बचन बिलास ।
हाव भाव जौ तीय के, पति आंधे के पास ॥४७॥
भले बुरे जहां एक से, तहां न बसियै जाय ।
ज्यौं अन्यीय पुर में बिकै, खर गुर एकै भाय ॥४८॥
न करि नाम रंग देखि सम, गुन बिन समझे बात ।
गात धात गोदूध तें, सेंहुड के तें घात ॥४९॥
बिन गुन कुल जाने बिना, मान न करि मनुहारि ।
ठगत फिरत सब जगत कौं, भेष भक्त कौ धारि ॥५०॥
हितहू की कहियै न तिहिं, जो नर होय अबोध ।

ज्यौं नकटे कौं आरसी, होत दिखाये क्रोध ॥५१॥
अति अनीति लहियै न धन, जो प्यारौ मन होय ।
पाये सोने की छुरी, पेट न मारे कोय ॥ ५२ ॥
मूरख कौं पोथी दई, बांचन कौं गुन गाथ ।
जैसे निरमल आरसी, दई अंध के हाथ ॥५३॥
मधुर बचन तें जातु मिट, उत्तम जन अभिमान ।
तनक सीत जल सों मिटै, जैसें दूध उफान ॥५४॥
जासो रछा होत है, है ताही सौं घात ।
कहा करै कोउ जबै, बार ककरिया खात ॥५५॥
सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय ।
पवन जगावत आग कौं, दीपहि देत बुझाय ॥५६॥
कछु बसाय नहिं सबल सों, करै निबल पर जोर ।
चलै न अचल उखार तरु, डारति पवन झकोर ॥५७॥
सबै समझ कै कीजिये, काम वहै अभिराम ।
सैंधव माग्यौ जेवतें, घोरा कौ कहा काम ॥५८॥
जो जाहीं सों रच रह्यौ, तिहिं ताही सों काम ।
जैसें किरवा आक कौ, कहा करै बस आम ॥५९॥
जिय चाहै सोइ मिलै, जियत भलौ हिय लागि ।
प्यासौ चाहत नीर कौं, कहा करै लै आगि ॥६०॥
जिय पिय चाहै तुम करौ, घन चन्दन उपचार ।
रोग कछू औषध कछू, कैसें होत करार ॥६१॥

विरह तपन पिय बात तै, उठत चौगुनी जागि ।
जल के सीचे चढत है, ज्यौं सनेह की आगि ॥६२॥
रोस मिटे कैसें कहत, रिस उपजावन बात ।
इंधन डारे आग मों, कैसे आग बुझात ॥६३॥
अति हट मत कर हट बढै, बात न करिहै कोय ।
ज्यौं ज्यौ भीजै कामरी, त्यौं त्यौं भारी होय ॥६४॥
लालच हू ऐसी भली, जासौं पूरै आस ।
चाटे हू कहुं ओस के, मिटै काहू की प्यास ॥६५॥
विष हूं तें सरसी लगै, रस में रिस की भाख ।
जैसें पित्त ज्वरीन कौं, करवी लागति दाख ॥६६॥
जो जेहिं भावे सो भलो, गुन को कछु न बिचार ।
तज गजमुकता भीलनी, पहरति गुंजा हार ॥६७॥
हरिरस परिहरि विषयरस, संग्रह करत अजान ।
जैसे कीट करत है, छाडि सुधा विष पान ॥६८॥
कुल मारग छोडे न कोउ, होहु बृद्धहूं के हानि ।
गज इक मारत दूसरो, चढत महावत आनि ॥६९॥
जासो निभहै जीविका, करिये सो अभ्यास ।
बेस्या पालै सील तौ, कैसें पूरे आस ॥७०॥
दुष्ट न छांडे दुष्टता, कैसेंहू सुख देत ।
धोये हूं सौ बेर के, काजर होय न सेत ॥७१॥
कहूं अवगुन मोइ होत गुन, कहुं गुन अवगुन होत ।

कुच कठोर त्यौं हैं भले, कोमल बुरे उदोत ॥७२॥
असुभ करत सोइ होत सुभ, सज्जन बचन अनूप ।
स्रवन पिता दिय दसरथहि, साप भयौ बर रूप ॥७३॥
एक भलो सब कौं भलौ, देखो सबद विवेक ।
जैसें सत हरिचंद के, उधरे जीव अनेक ॥७४॥
एक बुरे सब कौ बुरौ, होत सबल के कोप ।
अवगुन अर्जुन के भयौ, सब छत्रिन कौ लोप ॥७५॥
बडे न पै जाचे भलौ, जदपि होत अपमान ।
गिरत दंत गजडाढ तें, गज के तऊ बखान ॥७६॥
अवगुन करता औरहीं, दंत और कौं मार ।
ज्यौं पहुंचै नहि रुद्र कौं, जारत बिरहनि मार ॥७७॥
मान होत है गुननि तें, गुन बिन मान न होइ ।
सुकसारो राखैं सबै, काग न राखै कोइ ॥७८॥
आडंबर तज कीजियै, गुन संग्रह चित चाय ।
छीर रहत न बिकै गऊ, आनिय घंट बंधाय ॥ ७९ ॥
जैसौ गुन दीनौ दई, तैसौ रूप निबंध ।
ये दोऊ कहां पाइयै, सौनौ और सुगंध ॥८०॥
अभिलाषी इक बात के, तिन में होय बिरोध ।
ज्यौं राज के राज सुत, लरत भिरत करि क्रोध ॥८१॥
जो जाकौ चाहे भलौ, सो ताही की पीर ।
नीर बुझावे आग कौं, सोखै ताहि समीर ॥८२॥

आहित कियेहू हित करै, सज्जन परम सधीर ।
सोखें हूं सीतल करै, जैसें नीर समीर ॥८३॥
है सहाय हित हू करै, तऊ दुष्ट दुख देत ।
जैसें पावक पवन कौं, मिलैं जराये लेत ॥८४॥
अपनी अपनी ठौर पर, शोभा लहत विशेष ।
चरन महावर है भली, नैनन अंजन रेख ॥८५॥
जो चाहौ सोई करौ, मेरौ कछुन कहाव ।
जंत्री के कर जंत्र है, जो भावै सो बजाव ॥८६॥
जाकौ जैसौ उचित तिहिं, करियै सोइ बिचारि ।
गीदर कैसें ल्याइ है, गज मुक्ता गज मारि ॥८७॥
जुदे न जैसे लहत हैं, मिले बिरंगहु रंग ।
काथ संग चूनौ परंत, होत लाल मिल संग ॥८८॥
नहि इलाज देख्यौ सुन्यौ, जासों मिटत सुभाव ।
मधु पुट कोटिक देत तऊ, विषन तजत विष भाव ॥८९॥
जाकौ जासों मन लग्यौ, सो तिहिं आवै दाय ।
भाल भस्म विष मुंड शिव, तौहूं शिवा सुहाय ॥९०॥
होय कछू समझै कछू, जाकी मति बिपरीत ।
कनकभखी जैसैं लखै, स्याम सेत कौं पीत ॥९१॥
प्रेम निबाहन काठिन है, समझ कीजियौ कोय ।
भांग भखन है सुगम पै, लहर काठिन ही होय ॥९२॥
कोउ बिन देखे बिन सुनैं, कैसें कहै बिचार ।

कूप भेख जाने कहा, सागर कौ बिस्तार ।।९३।।
देव सेव फल देत है, जाकौ जैसौ भाय ।
जैसें मुख करि आरसी, देखौ सोइ दिखाय ।।९४।।
कुल बल जैसौ होय सो, तैसी करिहैं बात ।
बनिक पुत्र जाने कहा, गढ लेवे की घात ।।९५।।
जाकी ओर न जाइये, कैसें मिलि है सोइ ।
जैसें पछिम दिस गये, पूरब काज न होइ ।।९६।।
जैसी बंधन प्रेम कौ, तैसो बंधन और ।
काठहि भेदै कमल कौं, छेद न निकरै भौंर ।।९७।।
जे उदार ते देत हैं, रिझत जिंहिं तिहिंकाल ।
गाल बजाये हूं करैं, गौरीकंत निहाल ।।९८।।
अपनी अपनी गरज सब, बोलत करत निहोर ।
बिन गरजै बोलै नहीं, गिरवर हू कौ मोर ।।९९।।
जो सबही कौं देत है, दाता कहिये सोइ ।
जलधर बरषत सम विषम, थल न बिचारत कोइ ।।१००।।
तिन सों बिमुख न हूजियै, जे उपकार सुमेंत ।
मोर ताल जल पान करि, जैसें पीठ न देत ।।१०१।।
जो समझे जा बात कौं, सो तिहिं कहै बिचार ।
रोग न जानै ज्योतिषी, वैद्य ग्रहन कौ चार ।।१०२।।
नवल नेह आनंद उमंग, दुरैं न मुखचख ओर ।
तबही जान्यौ जात है, ज्यौं सुगंध कौ चोर ।।१०३।।

प्रकृत मिले मन मिलत है, अन मिलतें न मिलाय ।
दूध दही तें जमत है, कांजी तें फटजाय ॥१०४॥
बात कहन की रीति में, हैं अंतर अधिकाय ।
एक बचन तें रिस बढै, एक बचन तें जाय ॥१०५॥
एक बस्तु गुन होत है, भिन्न प्रकृत के भाय ।
भंटा एक कौं पित करत, करत एक कौं वाय ॥१०६॥
सुख में होत सरीक सौ, दुख सरीक सो होय ।
जाको मीठौ खाइयै, कटुक खाइयै सोय १०७॥
स्वारथ के सबही सगे, बिन स्वारथ कोउ नांहि ।
जैसें पंछी सरस तरु, निरस भये उडजाहिं ॥१०८॥
जो लायक जिनि भांति कौं, तासौं तैसी होय ।
सज्जन सों न बुरी करै, दुरजन भली न कोय १०९॥
सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत ।
दिवस गये ज्यौं निस उदित, निस गत दिवस उदोत ११०॥
जो भाखैं सोई सही, बडे पुरुष मुख खांनि ।
है अनंग ताकौं कहैं, महा रूप की खांनि ॥१११॥
दोष भरी न उचारियै, जदपि जथारथ बात
कहे अंध कौं आंधरौ, मान बुरौ सतरात ॥११२॥
पर घर कबहु न जाइयै, गये घटत है जोति ।
रवि मंडल में जातु ससि, छींन कला छबिहोत ॥११३॥
ओरहि तें कोमल प्रकृति, सज्जन परम दयाल ।

कौन सिखावत है कहो, राज हंस कौं चाल ॥११४॥
सज्जन अंगीकृत किए, ताकौं लेहि निवाहि ।
छई कलंकी कुटिल शसि, तउ शिव तजत न ताहि ११५॥
जिन पंडित बिद्या तजहु, धनि मूरख अवरेख ।
कुलजा सिलन परिहरे, कुलटा भूषित देख ॥११६॥
एक दसा निंबि है नहीं, जिन पछतावहु कोय ।
रवि हूं की इक दिवस मैं, तीन अवस्था होय ॥११७॥
होय शुद्ध मिटि कलुखता, सत संगति कौं पाय ।
जैसें पारस कों परस, लोह कनक ह्वै जाय ॥११८॥
ब्रह्म बनाए बन रहे, ते फिर और बनैन ।
कान कहत नहिं बैन ज्यौं, जीभ सुनत नाहि बैन ॥११९॥
नाहि पर्‍यौ जैसौ बिसन, ता बिन रहत न सोय ।
सुरा सुरापी ना तजै, जदपि बिकल गत होय ।१२०॥
जे चेतन ते क्यौं तजै, जाकौं जासों मोह ।
चुंबक के पाछै लग्यो, फिरत अचेतन लोह ॥१२१॥
घटति बढाति संपाति सुमति, गति अरहट की जोय ।
रीती घटिका भराति है, भरी सुरीती होय ॥१२२॥
प्रापति तैसी होति है, जिहिं जैसी लाभाइ ।
भाजनमित भरि सरित मे, जल भरि भरि लै जाइ ॥१२३॥
उत्तम जन की होड करि, नीचन होत रसाल ।
कौवा कैसें चल सकै, राजहंस की चाल ॥१२४॥

उत्तम जन के संग में, सहजै ही सुख भास।
जैसें नृप लावै अतर, लेत सभा जन बास ॥१२५॥
या जग की बिपरीति गति, समझी देखि सुभाव।
कहैं जनार्द्दन कृष्ण कौं, हर कौ संकर नाव ॥ १२६॥
भले लगैं सब कौं कहौ, कोऊ हित के बैन।
पिय आगम के काग बच, बिरहनि कौं सुख दैन ॥१२७॥
जो जाके हित की कहै, सो ताके अभिराम।
पिय आगम भाखी भलौ, बायस पिक किहिं काम ॥१२८॥
कोऊ कहै हित की कहै, है ताही सों हेत।
सबै डंडावत काग कौं, पै बिरहनि बल देत ॥१२९॥
को चाहे अपनौ तऊ, जा संग लहियै पीर।
जैसें रोग सरीर तै, उपजत दहत सरीर ॥१३०॥
एक बिरानौ ई भलौ, जिहिं सुख होत सरीर।
जैसें बन की ओखधी, हरत रोग की पीर॥१३१॥
जो पावै अति उच्चपद, ताकौ पतन निदान।
ज्यौं तपि तपि मध्यान लौं, अस्त होतु है भान ॥१३२॥
अनुचित अतिबल आपनौ, कहै अनादर होय।
संग्रह कियो न नृप दुहनि, रुक्मनि गयौ पति खोय॥१३३॥
कलुख भाव देखै जहां, उत्तम जन न रहांय।
जैसें पावस तजि अनत, राजहंस उडजाय ॥१३४॥
जो चाहै सोई लहै, यौं सुख होइ सरीर।

ज्यौं प्यासे जिय कौं मिलै, निरमल सीतल नीर ॥१३५॥
मनभावन के मिलन बिन, यौं जिय होत उदास।
ज्यौं चकोर की दिनदसा, चकवा चंद प्रकास ॥१३६॥
जिहिं प्रसंग दूख न लगै, तजियै ताकौ साथ।
मदिरा मानत है जक्त, दूध कलाली हाथ ॥१३७॥
जाके संग दूखन दुरै, करियै तिहिं पहिचानि।
जैसें समझै दूध सब, सुरा अहीरी पानि ॥१३८॥
जिहिं देखैं लछन लगै, तासों दृष्टि न जोर।
ज्यों कोऊ चितवै नहीं, चौथ चंद की ओर ॥१३९॥
मूरख गुन समझै नहीं, तौ न गुनी में चूक।
कहा भयौ दिन की बिभौ, देखी जौ न उलूक ॥१४०॥
खलजन सों कहियै नहीं, गूढ़ कबहूं करि मेल।
यौं फैलै जग मांहिं ज्यों, जल पर बूंद कि तेल ॥१४१॥
एकहि गुन ऐसो भलो, जिहिं अवगुन छिपजात।
नीरद के ज्यों रंग बद, बरसत ही मिट जात ॥१४२॥
मूढ़ तहां हीं मानियैं, जहा न पंडित होइ।
दीपक की रवि के उदै, बात न पूछै कोइ ॥१४३॥
बिन स्वारथ कैसें सहै, कोऊ कहै कुबैन।
लात खाय चुचकारियै, जु हैं दुधनी धैन ॥१४४॥
सज्जन तजत न सजनता, कीनेहू अपराध।
ज्यों चंदन छेदै तऊ, सुरभित करहि कुठार॥१४५॥

दुष्टन छांडै दुष्टता, पोखै राखैं ओट।
सरपहि केतौ हित करौ, चपै चलावै चोट ॥१४६॥
धन संच्यौ किहिं कामकौ, खाउ खरच हरि प्रीति।
बंध्यौ गंधी लौ कूप जल, कढै बढै इहिं रीति॥१४७॥
करै बुराई सुख चहै, कैसें पावै कोइ।
रोपै बिरवा आक कौ, आंब कहां तैं होइ॥१४८॥
होय बुराई तें बुरौ, यह कीनो निरधार।
खाड खनैगौ और कौं, ताकौ कूप तयार॥१४९॥
दिये सहस गुन देत सो, पावै यह सह बात।
बिज देत तिहिं कर सिरौ, आर देन तिहिं दात॥१५०॥
एक भेख के आसरें, जाति बरन छिप जात।
ज्यौं हाथी के पांव में, सब को पांव समात॥१५१॥
जाको जहां स्वारथ सधै, सोई ताहि सुहात।
चोर न प्यारी चांदनी, जैसें कारी रात॥१५२॥
जैसी ही भवतव्यता, तैसी बुद्धि प्रकास।
सीता हरिबे तैं भयौ, रावन कुल कौ नास॥१५३॥
निहचै भावी कौं कही, प्रतीकार जौ होइ।
तौ न लसे हरचंद से, विपत न भरते कोइ॥१५४॥
कछू सहाय न चलि सकै, होनहार के पास।
भिखम जुधिष्टिर से तहां, भौ कुरु बंस विनास॥१५५॥
अति ही सरल न हूजियौ, देखौ जैं बनराय।

सीधे सीधे छेदियै, वाकौ तरु बच जाय ॥१५६॥
बहुतन कौं न बिरोधियै, निबल जान बलवान ।
मिल भखि जाहिं पिपीलका, नागहि नग के मान ॥१५७॥
बहुत निबल मिल बलकरैं, करैं जु चाहैं सोय ।
तिनकन की रसरी करी, करी निबंधन होय ॥१५८॥
दुर्जन के संसर्ग तें, सज्जन लहत कलेस ।
ज्यौं दसमुख अपराध तें, बंधन लह्यौ जलेस ॥१५९॥
सुजन कुसंगति संग तैं, सज्जनता न तजंत ।
ज्यौं भुजंगगन संग तउ, चंदन बिख न धरंत ॥१६०॥
कष्ट परेंहूं साधजन, नैक न होत मलान ।
ज्यौं ज्यौं कंचन ताइयै, त्यौं त्यौं निरबल बान ॥१६१॥
जे उत्तम ते असम सौं, धरत न रिस मन मांहि।
घन गरजै हरि हूं करै, स्यार बोल सुनि नांहिं ॥१६२॥
खल बंचत नर सुजन कौ, नहि न बिसास करेइ ।
डहक्यौं उड प्रतिबिंब ते, मुकुता हंस न लेइ ॥१६३॥
मिथ्या भाखी सांचहू, कहै न मानै कोइ ।
भांड पुकारै पीर बस, मिस समझै सब कोइ ॥१६४॥
सदा समै बलवान पै, नाहिं पुरुख बलवान ।
काबरि लरि गोपी लई, बिरथ भये रथवान ॥१६५॥
कन कन जोरै मन जुरै, काटै निबरै सोय ।
बूंद बूंद ज्यौं घट भरै, टपकत बीतै तोय ॥१६६॥

थोरेही गुनतें कहुंक, प्रसिद्ध होत जग माहिं ।
एकहि करतें जय करी, करी सहस कर नाहिं ॥१६७॥
ऊंचे बैठे ना लहैं, गुन बिन बड़पन कोइ ।
बैठो देवल सिखर पर, बायस गरुर न होइ ॥१६८॥
दु:ख पाये बिनहू कहूं, गुन पावत है कोइ ।
सहै बेध बंधन सुमन, तब गुन संजुत होइ ॥१६९॥
निपट अबुध समझै कहा, बुध जन बचन बिलास ।
कबहूं भेक न जानइ, अमल कमल को बास ॥१७०॥
बिनसत सतगुन गुनिय के, अगुन पुरुख के पास ।
ज्यौं अंजन गिर चंद कर, नैक न होत प्रकास ॥१७१॥
सांच झूंठ निरनै करै, नीति निपुन जो होय ।
राजहंस बिन को करै, छीर नीर कौं दोय ॥१७२॥
इक समीप बसि अहित कर, इक हित कर बसि दूर ।
हंस बिनासै कमल दल, अमल प्रकासै सूर ॥१७३॥
दोखहि कौं उमहै गहै, गुन न गहै खल लोक ।
पियै रुधिर पय ना पियै, लगि पयोधर जोक ॥१७४॥
भलौ न होइ दुष्ट जन, भलौ कहै जो कोय ।
बिष मधुरै मीठौ लवन, कहै न मीठौ होय ॥१७५॥
कारज करत असाध के, सब में साध कहाय ।
जैसें सीत हेमंत कौ, बनजन देत जराय ॥१७६॥
एक उदर वाही समय, उपज न इक से होय ।

जैसें कांटे बेर के, बांके सीधे जोय ॥१७७॥
हरत दैवहू निबल अरु, दुरबल ही के प्रान।
बाघ सिंघ कौं छांड़ि कै, देत छाग बलदान ॥१७८॥
जिहिं जासों मतलब नहीं, ताकी ताहि न चाह।
ज्यौं निसप्रेही जीव के, तृन समान सुरनाह ॥१७९॥
जे पर ते पर यह समझ, अपनौ होय न कोय।
पाले पोखै काग तऊ, पिक सुत काग न होय ॥१८०॥
दीजै सीख अजान कौं, मानै सीख सुजान।
टारहि ताज न मारियै, ज्यौं कांपे के कान ॥१८१॥
उद्यम कबहु न छांडियै, पर आसा के मोद।
गागरि कैसें फोरियै, उनयौं देख पयोद ॥१८२॥
कारज धीरे होतु है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरवर फलै, केतक सीचौ नीर ॥१८३॥
जो पहिलें कीजै जतन, सो पीछे फलदाय।
आग लगैं खोदै कुंवा, कैसें आग बुझाय ॥१८४॥
होत सिद्धि जैसे समय, तैसो ही अभिलाख।
कौडी बिन जातन लियो, करी लेत दे लाख ॥१८५॥
क्यौं कीजौ ऐसौ जतन, जातें काज न होय।
परवत पै खोदै कुंवा, कैसें निकसै तोय ॥१८६॥
सांची संपति और की, और भोगबै आय।
कन संग्रह चैंटीन कौ, ज्यौं तीतर चुंगि जाय ॥१८७॥

खेयौ छोटौ ही भलौं, जासौं गरज सिराय ।
कीजै कहा पयोधि कौं, जाते प्यास न जाय ॥१८८॥
श्रमही तें सब मिलत है, बिन श्रम मिलै न काहि ।
सीधी अंगुरी घी जम्यौ, क्यौंहूं निकसै नाहि ॥१८९॥
कहियै बात प्रमान की, जासौ सुधरे काज ।
फीकौ थोरे लौन तें, अधिकै खारौ नाज ॥१९०॥
कहैं रसीली बात सो, बिगरी लेत सुधारि ।
सरस लौन की दार में, ज्यौं निंबू रस डारि ॥१९१॥
जो चाहै सोइ करै, बडे असंकित अंग ।
सब के देखत नगन हर, धरत गौरी अरधंग ॥१९२॥
बडे सहज ही बात सें, रीझि देत बकसीस ।
तुलसी दल तें बिष्णु ज्यौं, आक धतूरे ईस ॥१९३॥
बडे कहैं सो कीजियै, करैं सुकरियै नांहि ।
हरज्यौं पंचन में फिरैं, और जो बिकल कहाहिं ॥१९४॥
काहू कियौ न कीजियै, तिय जिय कौ बिस्वास ।
गौरि धरी अर्द्धंग हर, हरि घर घर में बास ॥१९५॥
सुधरी बिगरै बेगही, बिगरी फिर सुधरै न ।
दूध फटै कांजी परै, सो फिर दूध बनै न ॥१९६॥
न कछु तऊ जाकी तलब, ताही की मनुहार ।
सिलक समें नृप लेत हैं, तृनहू हाथ पसार ॥१९७॥
गुनी तऊ अवसर बिना, आग्रह करै न कोइ ।

हियतें हार उतारियै, सयन समें जब होइ ॥१९८॥
जदपि अपनौ होय तउ, दुःख में करत न सीर ।
ज्यौं दुखती अंगुरी निकट, दुसरी ताहि न पीर ॥१९९॥
त्रिया मिलै अभ्यास तें, सजन सुभाव मिलैन ।
सौत बिपुल कांनूनि करैं, बिपुल न ह्वैहै नैन ॥२००॥
काम समें पावै सु दुःख, जै निरबल के अंग ।
मरदन खंडन सहत हैं, ज्यौं अबला के अंग ॥२०१॥
यह कहवत जैसौ करै, तैसौ पावै लोय ।
औरन कौं आंधे करै, आंधौ कहियत सोय ॥२०२॥
छोटे नर तें रहत हैं, सोभा जुत सिरताज ।
निरमल राखै चांदनी, जैसें फायनदाज ॥२०३॥
हित हू भलौ न नीच कौ, नाहि न भलौ अहेत ।
चाट अपावन तन करै, काटि स्वान दुख देत ॥२०४॥
सहज रसीलौ होय सौ, करै अहित पर हेत ।
जैसें पीडित कीजियै, ऊख तऊ रस देत ॥२०५॥
कर बिगरी सुधरै बचहि, जैसें बनक बिशेष ।
हींग मिरच जीरौ कहै, हगमर जर लिख लेत ॥२०६॥
अरि के संग कुटंब लखी, जिय उपजत है त्रास ।
बैसौं लगै कुठार कौं, तब बन राइ बिनास ॥२०७॥
कबहूं संगन कीजियै, [illegible] प्रकृत की हानि ।
गूंगे कौं समझायबौ, गूंगे को [illegible]ति आनि ॥२०८॥

कोऊ काहू कौ बुरौ, करैं परै तिंहिं धाम ।
काटे पर की नाक कौं, नकटी रानी नाम ॥२०९॥
कहा करै कोऊ जतन, प्रकृत न बदलै कोइं ।
सानै सदा सनेह में, जीभ न चिकनी होइ ॥२१०॥
जदपि सहोदर होय तऊ, प्रकृत और की और ।
बिख मारै ज्यावै सुधा, उपजे एकहि ठौर ॥२११॥
डरैं न कबहूं दुष्ट सों, जाहि प्रेम की बान ।
भौंर न छांडे कैतकी, तीखे कंटक जान ॥२१२॥
बहुत किये हू नीच कौ, नीच सुभावन जात ।
छांडि ताल जल कुंभ में, कौवा चौंच भरात ॥२१३॥
चतुर कूर इक से गुनै, जाके नांहि बिबेक ।
जैसें अबुध गवार कैं, पांच कांच है एक ॥२१४॥
कूरन होई चतुर नर, कूर कहै जो कोइ ।
मानौ काच गंवार तऊ, पाच काच नहिं होइ ॥२१५॥
कैसें हू छूटत नहीं, जामें परी कुबानि ।
काग न कोइल ह्वै सकै, जो बिधि सिखवै आंनि ॥२१६॥
भेख बनावै सूर कौ, कायर सूर न सोय ।
खाल उढावे सिंघ की, स्यार सिंघ नहिं होय ॥२१७॥
धन बाढै मन बढि गयौ, नाहिन मन घट होय ।
ज्यौं जल संग बाढै जलज, जल घटि घटै न सोय ॥२१८॥
सब तैं लघु है मांगबौ, जामें फेर न सार ।

बलि पै जाचतही भए, बामन तन करतार ॥२१९॥
बड़े न लोपैं लाज कुल, लोपै नीच अधीर ।
उदधि रहै मरजाद में, बहै उलट नद नीर ॥२२०॥
नाम भलौ होत न भलौ, भलौ भाग जिहिं भाल ।
अचि नाम मांगत फिरै, भूखौ ना भूपाल ॥२२१॥
उत्तम पर कारज करै, अपनौ काज बिसार ।
पूरै अन्न जहांन कौं, तापर भिक्षा धार ॥२२२॥
देवन हूं सो देव प्रभु, कहा सुरेस नरेस ।
कीनौ मीत धनेस तऊ, पहरै चरम महेस ॥२२३॥
सब इक से होत न कहूं, होत सबम में फेर ।
कपरौ खादी बाफ तौ, लोहै तवा सम सेर ॥२२४॥
अपनौ समैं बिचारि कै, अर जीतियै अचूक ।
दिवस काग घूघहि हनइ, कागही निस ज्यौं चूक ॥२२५॥
छल बल समैं बिचारिकै, अरि हनियै अनयास ।
कियौ अकेले द्रोनसुत, निस पंडव कुलनास ॥२२६॥
काम परै ही जानियै, जो नर जैसौ होय ।
बिन तायै खोटौ खरौ, गहनौ लखै न कोय ॥२२७॥
जैसी संगति तैसियै, ईजत मिलि है आय ।
सिर पर मखमल सेहरै, पनहि मखमल पाय ॥२२८॥
अनघर सुघर समाज में, आय बिगारि रंग ।
जैसैं हौज गुलाब कौ, बिगरै स्वान प्रसंग ॥२२९॥

अनमिल सुमिल समाजसौं, होत गये उठि चैन ।
जैसें तिन पर देत दुःख, निकसै बिकसै नैन ॥२३०॥
चतुर सभा में कूर नर, सोभा पावत नांहि ।
जैसे बक सोहत नहीं, हंस मंडली मांहि ॥२३१॥
रसिक सभा में निरस नर, होत होत रस हांनि ।
जैसै भैसा ताल परि, मलिन करत जलआनि॥२३२॥
मिल्यौ दुष्ट नाहिन भलौ, उपजत मिलै अहेत ।
ज्यौं कांटौ गडि देह में, अटकि खटकि दुःखदेत ॥२३३॥
दोख धरै निरदोख कौं, जे नर होय सदोख ।
घटि उदार दाता कहै, जिहि न जीय संतोख॥२३४॥
होत सुसंगति सहज सुख, दुख कुसंग के थान ।
गंधी और लुहार को, देखौ बैठि दुकान ॥२३५॥
भले बचन मुख नीच के, नाँहि न होत प्रकास ।
हिंग लसन में ना मिलै, घन कस्तुरी बास ॥२३६॥
सुधरौ बिगर कुसंग तैं, सत संगति कौं पाय ।
बास बसी कर हींग की, जीरा संग मिटि जाय॥२३७॥
मिलै सुसंगति उच्चहू, करत नीच सों प्यार ।
खर कौं गंग न्हवाइयै, तऊ न छांडै छार ॥२३८॥
बिगर्‍यौ होय कुसंग जिहिं, कौन सकै समझाय ।
लसन बसाये बसन कौं, कैसें फूल बसाय ॥२३९॥
है है बडे बडेन सौं, होय न छोटे काज ।

गहै बिटप जुफ तीन कौं, गहि न सकैं गजराज ॥२४०॥
अजगुन लखि नर नीच की, काहू कौंन सुहात ।
दाख बिरानी खात खर, को न देखि अनखात ॥२४१॥
छांडि सबल अरु निबल की, कबहु न गहियै ओट ।
जैसें टूटी डारि कौं, लगै बिलंबै चोट ॥२४२॥
प्रेम छके मन कौं हटकि, रखि न सकै कुल लाज ।
कंवल नाल के तंत सों, को बांधै गजराज ॥२४३॥
बात प्रेम की राखियै, अपने मनही माहिं ।
जैसें छाया कूप की, बाहिर निकसै नाहिं ॥२४४॥
ताकौं त्यौं समझाइयैं, ज्यौं समझै जिहि बांनि ।
बैन कहत मग अंध कौं, ज्यौं बहिरे कौं पानि ।.२४५॥
बिपत परे सूख पाइयै, ना ढिग करियै भौंन ।
नैन सहाई बधिर के, अंध सहाई श्रौन ॥२४६॥
हीन अकेलौ ना भलौ, मिले भले नहिं दोय ।
जैसें पावक पौन मिल, बिफरै हाथ न होय ॥२४७॥
जैसौ थानक सेइयै, तैसो पूरै काम ।
सिंह गुफा मुकुता मिलै, स्यार खुरी खर चाम ॥२४८॥
बाके सीधे कौ मिलन, निबहै नाहि निदान ।
गुनग्राही तौऊ बजत, जैसें बान कमान ॥२४९॥
क्यौं करियै प्रापति अलख, जामें श्रम अति होइ ।
कौन जु गिर बर खोदि कै, चूहौ काढै जोइ ॥२५०॥

होय पहुंच जाकी जितीं, तेतौ करतु प्रकास ।
रबि ज्यौं कैसें करी सकै, दीपक तम कौ नास ॥२९१॥
जहां चतुर नाहिं न तहां, मूढनि सों बिवहार ।
बर पीपर बिन होय हैं, ज्यौं एरंड अधिकार ॥२९२॥
होत न कारज मो बिना, यह जु कहै सुअयान ।
जहां न कुक्कुट शब्द तहां, होत न कहा बिहान ॥२९३॥
उत्तम को अपमान अरु, जहां नीच कौ मान ।
कहा भयौ जौ हंस की, निंदा काग बखान ॥२९४॥
यथा जोग की ठौर बिन, नर छबि पावै नांहि ।
जैसें रत्न कथीर में, काच कनक के मांहिं ॥२९५॥
बिपति बडेई सहि सकैं, इतर बिपति तैं दूर ।
तारे न्यारे रहत हैं, गहै राह ससि सूर ॥२९६॥
ठौर छूटे तैं मीत हू, ह्वै अमीत सतरात ।
रविजल उखेरे कमल कौं, जारत गारत जात ॥२९७॥
होत बहुत धन होत तउ, गुन जुत होत उदोत ।
नेह भर्यौ दीपक तऊ, गुन बिन जोत न होत ॥२९८॥
कहा भयौ जो धन भयौ, गुन तैं आदर होइ ।
कोटि दीय भारी धनुख, गुन बिन गहत न कोइ ॥२९९॥
जात गुनी जातन तहां, आडंबर जुत सोइ ।
पहुंचे चंग अकास लौं, जौ गुन संजुत होइ ॥३००॥
गुनवारो संपति लहै, लहै न गुन बिन कोइ ।

काढै नीर पताल तैं, जो गुन जुत घट होइ ॥२६१॥
को करि सकै बडेन सों, कबहू प्रति उपकार ।
गिरसुरनर राख्यी न दधि, मुनि अचयौ तिहिं बार ॥२६२॥
बिया गुरु की भक्ति सौं, कै कीने अभ्यास ।
भील द्रोन के बिन कहे, सीख्यौ बान बिलास ॥२६३॥
गुरु हू सिखवैं ज्ञान गुड़, सिष्य सु बुद्धि जो होय ।
लिखे खर धरी भीत पर, चित्र चितेरौ कोय ॥२६४॥
पंडित पंडित सौं मिले, संसौ मिटत न बेर ।
मिले दीप दुहूं दुहुंन कौं, होत अंधेर निबेर ॥२६५॥
उद्दिम बुधि बल सौं मिले, तब पावत सुख साज ।
अंध कंध चढि पंग ज्यौं, सबै सुधारत काज ॥२६६॥
जाकौ हृदै कठोर तिहिं, लगै न कोमल बैन ।
मैन बान ज्यौं पथर में, क्यौं हूं किये भिदैन ॥२६७॥
सब कौं रस में राखिये, अंत लीजियै नाहिं ।
बिख निकस्यौ अति मथन तैं, रतनाकर हू मांहि ॥२६८॥
फल बिचारि कारज करौ, करहु न व्यर्थ अमेल ।
तिल ज्यौं बारू पेलिये, नाहि न निकसै तेल ॥२६९॥
पाछैं कारज कीजियै, पहले पहुंच बिचार ।
कैसें पावत उच्च फल, बावन बांह पसार ॥२७०॥
दुष्ट निकट बसिये नहीं, वसन कीजिये बात ।
कदली बेर प्रसंग तें, छिदे कंटक न पात ॥२७१॥

तिनके कारज होत हैं, जिनके बडे सहाइ ।
कृष्ण पच्छ पांडव जई, कौरव गए बिलाइ ॥२७२॥
पुन्य बिबेक प्रभाव तैं, निहचल छल निवास ।
जोलौं तेल प्रदीप में, तौ लौं जोति प्रकास ॥२७३॥
नर कारज की सिद्धि लौं, करै अनेक प्रकार ।
छूटै रोग सरीर तैं, कौ ढूंढै उपचार ॥२७४॥
अरि छोटौ गनिये नहीं, जातैं होय बिगार ।
तृन समूह को छिनक में, जारत तनक अंगार ॥२७५॥
छोटे अरि पारि चढत है, सजे सुभट तनत्रान ।
कीजे ससा अखेट पर, नाहर की सामान ॥२७६॥
गुन ते संग्रह सब करे, कुल न बिचारै कोय ।
हरिहू मृगमद को तिलक, करत लेत जग मोय ॥२७७॥
बुरौं होय तउ सुकुल को, तासौं बुरौ न होय ।
जदपि धुवां है अगर को, करत सुगंधित सोय ॥२७८॥
ताकौ अरि कहा करि सकै, जाको जतन उपाय ।
जरै न तातो रेत सौं, जाकें पनहीं पाय ॥२७९॥
पंडित जनकौ स्त्रम मरम, जानत जे मति धीर ।
कबहू बांझ न जानई, तन प्रसूत की पीर ॥२८०॥
सूर बीर की संपदा, कांयर पै नहि जांय ।
निहचै जानौं सिंह बल, स्यार न कबहू खाय ॥२८१॥
भूपति के संग सुभट गन, आपस में यह रीत ।

बन अभीत ज्यौं सिंह तैं, बन तैं सिंह अभीत ॥२८२॥
जाय दरिद कवि जनन कौ, सेवै राज समाज ।
सिंह नृपति तब होत है, हाथ चढै गजराज ॥२८३॥
वीर पराक्रम ना करै, तासों डरत न कोइ ।
बालक हू कैं चित्र कौ, बाघ खिलौंना होइ ॥२८४॥
वीर पराक्रम तै करै, भुव मंडल कौ राज ।
जोरावर यातैं करत, बन अपनौ मृगराज ॥२८५॥
जोरावर अरि मारियै, बुध बस किये उपाय ।
कालयमन कौं ज्यौं किसन, पट मुचकुन्द उढाय ॥२८६॥
राजा के बल लोक सब, फिरैं धरैं चहुं ओर ।
ज्यौं बन मैं छूटैं चरैं, बधि हय के जोर ॥२८७॥
नृप प्रताप तैं देस में, रहे दुष्ट नहिं कोय ।
प्रगटे तेज दिनेस कौ, तहां तिमिर नहिं होय ॥२८८॥
यहै बात सबही कही, राजा करै सु न्याव ।
ज्यौं चौपर के खेल में, पासौं परै सुदाव ॥२८९॥
कारज ताही को सरे, करै जु समैं निहारि ।
कबहु न हारै खेल मै, जो ले दाव बिचारि ॥२९०॥
सब देखै पै आपनौ, दोख न देखै कोइ ।
करै उजेरौं दीप पै, तरै अंधेरौ होइ ॥२९१॥
संत कष्ट सह अति सुखी, राखै राख समीप ।
आप जरै तउ और कौं, करै उजेरौ दीप ॥२९२॥

मारै इक रच्छा करै, एकहि कुल कौ होय ।
ज्यौं कृपांन अरु कवच ये, एक लोह सौं दोय ॥२९३॥
अपनी अपनी ठौर पर, सब कौ लागै दाव ।
जल में गाडी नाव पर, थल गाडी पर नाव ॥२९४॥
मुनि मन सुथिर कुबात तैं, कैसैं राखै कोइ ।
जल प्रति बिंबित बात बस, थिरहूं चंचल होइ ॥२९५॥
जो हाजिर अबसांन पर, सोई शस्त्र प्रमान ।
डाभहिं तैं बलदेव ज्यौं, हरे सूत के प्रान ॥२९६॥
बडे अनीति करैं तऊ, बुरो कहै नहिं कोय ।
बाल हत्यो अपराध बिन, ताहि भजै सब कोय ॥२९७॥
नीति निपुन राजानि कौं, अजगुत नाहि सुहाय ।
करत तपस्या सूद्र कौं, ज्यौं मार्‍यौ रघुराय ॥२९८॥
लघु मिलन गरुवे जदपि, बडे कछू लै तांहिं ।
गिरवर आनै कपिन के, जो मकरालय माहिं ॥२९९॥
भले बुरे छोटे बडे, रहैं बडेनि पै आय ।
मकर असुर सुरगिर अनल, दधि मधि सकल बसाय ॥३००
बडे भार लै निरबहैं, तजत न खेद बिचारि ।
सेस धरी धरि धर धरै, अब लौं देत न डारि ॥३०१॥
बुरी करे पर जे बडे, भली करैं हित धारि ।
जैसैं दधि बांध्यौ तऊ, कपि दल दियौ उतारि ॥३०२॥
उत्तम जन सौं मिलतही, अवगुन सो गुन होय ।

घनसंग खारौ उदधि मिल, बरसै मीठौ तोय ॥२०३॥
काहू सौं नाहीं मिटै, अपरापत के अंक ।
बसत ईस के सीस तउ, भयौ न पूर्न मयंक ॥२०४॥
कोऊ दूर न कर सकै, बिधि के उलटे अंक ।
उदधि पिता तउ चंद कौ, धौयन सक्यौ कलंक ॥२०५॥
गहिये ओट बड़ेन की, जहां मिटै दुख संक ।
उदधि सरन मैनाक कौ, मेट न सक्यौं कलंक ॥२०६॥
छल बल धर्म अधर्म करि, अरि साधिये अभीति ।
भारथ मे अर्जुन कीसन, कहा करी युध रीति ॥२०७॥
गाहक सबे सपूत कै, सारे काज सपूत ।
सब कौ ढंपन होतु है, जैसें बस्त्र कौ सूत ॥२०८॥
आप कष्ट सह और को, सोभा करत सपूत ।
चरखी पीनन चरख खिच, जग ठंकन ज्यौं सूत ॥२०९॥
करत करत अभ्यास के, जडमति होत सुजान ।
रसरी आवत जात तैं, सिल पर परत निसान ॥२१०॥
सुख दिखाय दुख दीजियै, खल सौं लरियै काहि ।
जौ गुर दीने ही मरे, क्यौं बिख दीजि ताहि ॥२११॥
बूझे ही तैं जानिये, बुध मूरख मन मांहि ।
छलकै ओछे नीर घट, पूरे छलकत नांहि ॥२१२॥
सहज सतोख है साध कौं, खल दुख देन प्रवीन ।
मछवा मारतु जल बसत, कहा बिगारत मीन ॥२१३॥

सुन्दर थान न छोडिये, जौ लौ होय न और ।
पिछलौ पाय उठाइये, देखि धरनि की ठौर ॥३१४॥
फिर पीछै पछताइयै, सो ना कर मति सूध ।
बदन जीभ हिय जरतु है, पीवत तातौ दूध ॥३१५॥
को सुख को दुख देतु है, देतु करम झकझोर ।
उरझै सुरझै आपही, ध्वजा पवन के जोर ॥३१६॥
सब सुख है संतोष में, धरियै मन संतोख ।
नेक न दुरबल होतु है, सर्प पवन के पोख ॥३१७॥
पाय परैहू पिशुन सौं, बिहस न करियै बात ।
नमतु कूप कौं डोल ज्यौं, जीवन हर ले जात ॥३१८॥
सबल न पुष्ट सरीर कौ, सबल तेज जुत होय ।
लष्ट पुष्ट गज दुष्ट ज्यौं, अंकुश के बस होय ॥३१९॥
कायर नर कौं देख नर, मुख फीकौ दरसाय ।
रंग पतंग ज्यौं धूप में, झमक चटक घट जाय ॥३२०॥
दोख धरै गुन कौं पिशुन, इह डर गुन न बिसारि ।
जूं के भय तैं बसन कौं, देतु कहा कोउ डारि ॥३२१॥
भली करत लागति बिलम, बिलम न बुरे बिचार ।
भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगति न बार ॥३२२॥
सोई अपनौ आपनौ, रहै निरंतर साथ ।
होत परायौ आपनौ, शस्त्र पराये हाथ ॥३२३॥
बिनसत बार न लागई, ओछे नर की प्रीति ।

अंबर डंबर सांझ के, ज्यौं बारू की भीति ॥३२४।
करिये बात न तन परस, खल ढिग जैये नाहि ।
कटुक नींब तर जातही, मुख करवौ ह्वै जाहि ॥३२५॥
निपट अमिलती बात कौं, कैसैं करिहै कोइ ।
बसन नील के मांट में, कबहू लाल न होइ ॥३२६॥
देखि ठिकानी मांगिये, मांगे मिलै जु होय ।
मुनि घर भीतर कांगही, ढूंढै लहत न कोय ॥३२७॥
कहे मूढ की बात के, करिये जो चित होय ।
सौंह दिवाये और के, परे अग्नि में कोय ॥३२८॥
झूठहु ऐसौ बोलिये, सांच बराबर होय ।
ज्यौं अंगरी सौ भीत पर, चांद बतावै कोय ॥३२९॥
समझे अनसमझे कछुक, कहिये मीठी बात ।
बालक के सुन सुन बचन, जैसें श्रवन सुहात ॥३३०॥
सुबुध बीच परि दुहुन कौं, हरत कलह रस पूर ।
करत देहरी दीप ज्यौं, घर आँगन तम दूर ॥३३१॥
अधिक दुखी लखी आप तैं, दीजे दुख बिसराय ।
धरमसुवन बन दुख हर्‌यौ, मुनि नल बिपत बताय ॥३३२॥
होत बुरे ते हूं भलौ, काहू समै प्रकास ।
अधिक मास तैं ज्यौं मिट्यौ, पांडव फिर बनवास ॥३३३॥
एक अनीत करै लहै, संगी दुख सुख नाहिं ।
भीम कीचकन कौं दिये, मारि चिता के माहिं ॥३३४॥

बडे बिपतहू में करैं, भले बिराने काम ।
किय बिराट पन की बिजै, अर्जुन करि संग्राम ॥२३५॥
बडे बडेई काम करि, आप सिहावत नाहिं ।
जय जस उत्तर कौं दियौ, पथ बिराट के माँहि ॥२३६॥
बडे बचन पलटैं नहीं, कहि निरबाहैं धीर ।
कियौ बिभीखन लंकपति, पाय बिजै रघुबीर ॥२३७॥
बुरा करै तेई बुरे, नांहि बुरौ कोउ और ।
बनज करै सो बानियौ, चोरी करै सो चोर ॥२३८॥
झूठ बसै जा पुरुख में, ताही की अप्रतीति ।
चोर जुआरी सो भले, यातें करत न प्रीति ॥२३९॥
कुल सपूत जान्यौ परै, लखि सुभ लच्छन गात ।
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात ॥२४०॥
नियमत जननी उदर में, कुल कौ लेत सुभाव ।
उछलत सीहन कौ गरभ, होत कुपति घनराव ॥२४१॥
बिना सिखाये लेत है, जिहिं कुल जैसी रीति ।
जनमत सिहन कौं तनय, गज पर चढत अभीति ॥२४२॥
सत्य बचन मुख जो कहत, ताकी चाह सराह ।
गाहक आवत दूर तें, सुनि इक शब्दी नाह ॥२४३॥
प्रेम पंक्ति जासों भई, सुख दुख जाके संग ।
बसत कमल अलि वास बस, कल भल भखंन पतंग ॥२४४॥
चहल पहल अवसर परब, लोक रहत घर घेर ।

ते फिरि दृष्ट न आवही, जैसें फसल बटेर ॥२४५॥
बुद्धि बिना बिद्या कहौ, कहा सिखावै कोइ ।
प्रथम गांवही नाहिं तौ, सींव कहां तें होइ ॥२४६॥
बहुत न बकिये कीजियैं, कारज अवसर पाय ।
मोन गहे बक दाव पर, मछरी लेत उठाय ॥२४७॥
भजन निरंतर संतजन, हरि पद चित्त लगाय ।
जैसें नट दृढ दृष्टि करि, धरत बरत पर पाय ॥२४८॥
कहा रस में कहा रोस में, अरि सौं जिन पतियाय ।
जैसें सीतल तप्त जल, डारत आग बुझाय ॥२४९॥
चपचप करती ना रहै, नर लबार की जीह ।
चल दल जैसे चपल चल, जलत रहै निस दीह ॥२५०॥
जैसो प्रभु तैसो अनुग, होय सुबात प्रमान ।
बावन कर की लष्टिका, बढै चढी असमान ॥२५१॥
बढै न ऐसो कौन है, दान मान कौं पाय ।
पाय धरा बावन भए, सेस स्वर्ग धर पाय ॥२५२॥
अपनी कीरति कान सुनि, होत न कौन खुस्याल ।
नाग मंत्र के सुनतही, बिष छोडत है ब्याल ॥२५३॥
बिद्या याद किये बिना, बिसरत इहिं उनमान ।
बिसर जात बिन खबर तें, चोली कौ सौ पान ॥२५४॥
सबै धकावें निबल कौं, सबल पुरातम पाठ ।
डारै नारि बहाय दे, अनिल अनल जल काठ॥२५५॥

अंतर अंगुरी चार कौ, सांच झूठ में होय ।
सब मानै देखी कही, सुनी न मानै कोय ॥२५६॥
निबहै सोई कीजियै, पन अपने उनमान ।
कैसैं होत गरीब पै, राजा कौ सौ दान ॥२५७॥
जोरन पहुंचै निबल कौं, जो पै सबल सुहाय ।
भोडर की फानूस कौ, दीप न बात बुझाय ॥२५८॥
कारन बिन कारज नही, निहचै मान बचन्न ।
करै रसोई जौ मिलै, आग इंधन जल अन्न ॥२५९॥
परी विपत तें छूटियै, करियै और उपाव ।
कैसे निकसै जतन बिन, परी भौंर में नाव ॥२६०॥
दुख सुख दीवे कौं दई, है आतुर इहिं ठाट ।
आहि करंड मूसा पर्‌यौ, भखि निकर्‌यौ उहि बाट ॥२६१॥
प्रेरक ही तैं होत है, कारज सिद्धि निदान ।
चढे धनुष हू ना चलै, बिना चलाये बान ॥२६२॥
होय भले के सुत बुरौ, भलौ बुरे के होय ।
दीपक के काजर प्रगट, कमल कीच तें जोय ॥२६३॥
हार बडे की जीत है, निबल न मानै तास ।
बिमुख होय हरि ज्यौं कियौ, कालयमन कौ नास ॥२६४॥
होय भले चाकरन तैं, भलौ धनी कौ काम ।
ज्यौं अंगद हनुमान तें, सीता पाई राम ॥२६५॥
सब कौ समैं बिनास में, उपजति मति बिपरीति ।

रघुपति मार्‍यौ लंकपति, जो हरिलै गयौ सीति ॥३६६।

जो धनवंत सुदेय कछु, देय कहा धन हीन ।
कहा नीचोरै नग्न जन, न्हान सरोवर कीन ॥३६७॥

सुख सज्जन के मिलन कौं, दुर्जन मिलै जनाय ।
जानै ऊख मिठास कौं, जब मुख नींम चबाय ॥३६८॥

होत चाह कत होतु हैं, प्रेम सुसज्जन संग ।
पास दिये बिन बास पर, चढै न गहरौ रंग ॥३६९॥

जाहि मिलै सुख होतु है, ता बिछुरे दुख होय ।
सूर उदै फूलै कमल, ता बिन सकुचै सोय ॥३७०॥

झूठे ही करियै जतन, कारज बिगरै नांहि ।
कपट पुरुख धन खेत पर, देखत मृग भज जांहिं ॥३७१॥

प्रेम नेम के पंथ कौ, है कछु अद्भुत रूप ।
पिय बिन लागि लगत ज्यौं, सरद जोन्ह सौ धूप ॥३७२॥

दुखदाई सोइ देतु सुख, सुखदाई संग जात ,
घट जल भीजै चीर कौं, लागि लूय सियरात ॥३७३॥

सम सहाय के बिन मिले, दुखदाई दुख देइ ।
भींजे चीर बिन घट सलिल, लागत तपत करेइ ॥३७४॥

कारज सोई सुधरिहै, जौ करियै सम भाय ।
अति बरखै बरखे बिना, जौं कारिसन कुम्हिलाय ॥३७५॥

सज्जनता न मिलै किये, जतन करौ किन कोइ ।
ज्यौं करि फार निहारियै, लोचन बडौ न होइ ॥३७६॥

बिन बनाव बानिक बने, ताही के कुबखान ।
दगला पर ज्यौं अगर जौ, मीठे परत न स्वान ॥३७७॥
तन बनाय उपजाय रुचि, ठानत मान निदान ।
ज्यौं पंचामृत पोखि कै, छार तपत जल पान ॥३७८॥
तन देतन तन देन कों, मन मिल्यौ तन लाज।
ज्यौं आंकुस कौं नटत कौ, उदै गिर सौ गजराज ॥३७९॥
छोटेपन में आय है, कैसें मोटी बात ।
छेरी के मुंह में दीयौ, ज्यौं पेठा न समात ॥३८०॥
होत निबाह न आपनौ, लीने फिरे समाज ।
चूहा बिल न समात है, पूंछ बांधिये छाज ॥३८१॥
रहै प्रजा धन यह सौं, जहां बांकी तरवार ।
सो फल को उन कै सकै, जहां कटीली डार ॥३८२॥
जासौं परचै होय सो, पावै तिहि उनमान ।
रुपिया कौं खोटौ खरौ, कैसैं कहैं अजान ॥३८३॥
बिना प्रयोजन भूलिहू, ठटिये नांहि ठाट ।
जैबो नहि जा गाँव कौं, ताकी पूछन बाट ॥३८४॥
आपहि कहा बखानिये, भली बुरी को जोग ।
बूढे धन की बात कौं, कहैं बढाऊ लोग ॥३८५॥
इंगित तैं आकार तैं, जात जात जो भेट ।
तासौं बात दुरै नहीं, ज्यौं दाई सौं पेट ॥३८६॥
जानै सो बूझै कहा, आदि अंत बिरतंत ।

घर जन्मैं पशु कें कहा, देखत कोऊ दंत ॥३८७॥
कहबौ कछु करबौ कछू, है जग की बिधि दोय।
देखन के अरु खान के, और दुरद रद होय ॥३८८॥
आप कहे नाही करे, ताकौ है यह हेत ।
आप जाय नहिं सासुरे, औरन कौं सिख देत ॥३८९॥
जों कहियै सो कीजिये, पहलैं करि निर्धारि ।
पानी पी घर पूछबौ, नाहिन भलौ बिचारि ॥३९०॥
पीछै कारज कीजियै, पहले जतन बिचारि ।
बढे कहत हैं बांधियै, पानी पहलै बात ॥३९१॥
अरिहू बूझै मंत्र कौं, कहियै सांच सुनाय ।
त्यौं भीखम पंडवन कौं, दीनौ मरम बताय ॥३९२॥
कहियै जासों जो हितू, भली बुरी हू जाहि ।
चोर करै चोरी तऊ, सांच कहै घर जाहि ॥३९३॥
संपत बीतै बिलसबौ, सुख कौं चाहै कोइ ।
रूख उखारे फूल फल, कहधौं कैसैं होइ ॥३९४॥
रन सनमुख पग सूर के, बचन कहैं ते संत ।
निकसन पीछैं होत हैं, ज्यौं गयंद के दंत ॥३९५॥
आय बसें जिहिं दिन सुछिन, जे सज्जन चित माहिं ।
चित्र महावत दुरद पर, ज्यौं चढि उतरै नाहिं ॥३९६॥
बिन पूछेहि कहत हैं, सज्जन हित के बैन ।
भले बुरे कौं कहत हैं, ज्यौं तम चर गत रैन ॥३९७॥

बिछुरे गये बिदेस हू, सज्जन बिछुरे नाहिं ।
दूर भये ज्यौं कुररकी, सुरति सुतन के माहिं ।।३९८।।
बसिये तहां बिचारिकै, जहाँ दुष्ट गति नांहि ।
होत न कबहूं भँवर डर, ज्यौं चंपक बन मांहि ।।३९९।।
दान देत धन हीनता, होत तथापि बखान ।
दुरबल तऊ सराहिये, दुरद झरत जब दान ।।४००।
ठीक किये बिन और की, बात सांच मत थर्प ।
होत अंधेरी रैन में, परी जेबरी सर्प ।।४०१।।
झूठ बिना फीकी लगे, अधिक झूठ दुख भौन ।
झूठ तितौही बोलिये, ज्यौं आंटे में लौन ।।४०२।।
ठौर देखि कैं हूजिये, कुटिल सरल गति आप ।
बाहर टेढौ फिरत है, बांबी सूधौ सांप ।।४०३।।
एकतहू रह सजन खल, तजत न अपनौ अंग ।
मानि बिष हर बिष कर सरप, सदा रहत इक संग ।।४०४।।
भले बुरी जो आदरैं, कौन सकै निरवारि ।
सीत बिमल पावन करन, चलत नीच गति बारि ।।४०५।।
दोऊ चाहै मिलन कौं, तौ मिलाप निर्धार ।
कबहूं नाहिं न बाजि है, एक हात सौ तार ।।४०६।।
हिये दुष्ट के बदन तें, मधुर न निकसै बात ।
जैसें करई बेलि के, को मीठे फल खात ।।४०७।।
रूखे बचन मिलाप मों, कहत होत रस भंग ।

बीन बजत ज्यौं तार के, टूटे रहत न रंग ॥४०८॥
आप अकारज आपनो, करतु कुबुध के साथ ।
खाय कुल्हारी आपने, मारतु मूरख हाथ ॥४०९॥
ताही कौ करियै जतन, रहियै जिहि आधार ।
को काटै ता डार कौं, बैठै जाही डार ॥४१०॥
न्याय चलत बिगरै कछू, तौ भी करौं अपसोस ।
धार परत जो राज पथ, तौ न देत कोउ दोस ॥४११॥
भले भली ही कहत हैं, पै न कहत है दोस ।
सूरदास कहैं अंध कौ, उपजावत हैं तोस ॥४१२॥
सदा सथान प्रधान है, बल न प्रधान बताव ।
नाग डरावत गरुड कौं, हर उरहार प्रभाव ॥४१३॥
जामें बिद्या नारदी, बिगरन देत न लाग ।
पै सचोर भुंसि स्वान कौं, कहत धनी सौं जाग ॥४१४॥
भाग हीन कौं ना मिलै, भली बस्तु को भोग ।
दाख पके मुख पाक कौ, होत काग को रोग ॥४१५॥
सब कोऊ चाहत भलो, मित्र मित्र की ओर ।
ज्यौं चकई रबि कौ उदै, ससि कौ उदै चकोर ॥४१६॥
भले बंस संतति भली, कबहू नीच न होय ।
ज्यौं कंचन की खान मे, काच न उपजै कोय ॥४१७॥
सूर बीर के बंस में, सूर बीर सुत होय ।
ज्यौं सिंहन के गर्भ में, हिरन न उपजे कोय ॥४१८॥

करै न कबहू साहसी, दीन हीन कौ काज ।
भूख सहै पर घास कौ, नाहि भखै मृगराज ॥४१९॥
मान धनी नर नीच पै, जाचै नाहीं जाय ।
कबहु न मागै स्यार पै, बल भूख्यौ मृगराय ॥४२०॥
छोटे नर कौं बडिन सौं, कबहु बुरौ न होय ।
कुसहि आगि कर ना सकै, तपत उदधि कौ तोय ॥४२१॥
नीचहु उत्तम संग मिलि, उत्तम ही ह्वै जाय ।
गंग संग जल निंद्य हू, गंगोदक के भाय ॥४२२॥
अधिक चतुर की चातुरी, होत चतुर के संग ।
नग निरमल के डांक तैं, बढ़त जोति छबि रंग ॥४२३॥
परतच्छ नीं कै देखियै, कहा बरनौ कोउ ताहि ।
कर कंकन कौं आरसी, को देखतु है चाहि ॥४२४॥
सहज सील गुन सजन के, खल बुद्धि होत न भंग ।
रतन दीप की ज्यौं सिखा, बुझत न बात प्रसंग ॥४२५॥
रति रस श्रुति रस राग रस, पाय न चाहत और ।
चाखत मधु अरबिंद कौं, लेन ईख रस भौंर ॥४२६॥
मोह महातम रहतु है, जौ लौं ज्ञान न होत ।
कहा महातम रहि सकै, भये अदीत उदोत ॥४२७॥
सबुध अबुध की सेवकौ, यह सरूप जिय थाप ।
थल में रोपित कमल ज्यौं, बधिर कानै ज्यौं जाप ॥४२८॥
यौं सेवा राजान की, दीनी कठिन बताय ।

ज्यौं चुंबन ब्याली बदन, सिंह मिलन के भाय ॥४२९॥
पंडित अरु बनिता लता, शोभित आश्रय पाय ।
है मानिक बहु मोल कौ, हेम जटित छबि छाय॥४३०॥
इक गुन तैं शोभा लहै, इक अवगुन अवरोह ।
शोभ उरोजन पीनता, त्यौं कटि कृसता सोह ॥४३१॥
सुजन सुजन के दरसही, पावत जिय संतोष ।
लहत कछ के बत्स ज्यौं, सोम दृष्ट तैं पोष ॥४३२॥
सब संपति फल करत है, सुहृद जनन कौ हेत ।
दुरहि सूरज उदित ज्यौं, कमलन कौं सुख देत॥४३३॥
ऊंचे पद को पाय लघु, होत तुरतही पात ।
घन तैं गिर पर गिरत जल, गिरहूं तैं ढरि जात ॥४३४॥
अपनी प्रभुता कौं सबै, बोलत झूठ बनाय ।
बेस्या बरस घटावही, जोगी बरस बढाय ॥४३५॥
अपने लालच कें लिये, दुखहू आवै दाय ।
कान बिंधावै खाय गुर, पहरै बीर बधाय ।४३६॥
धनी गुनी कौं न्यायही, धन अरपै धरि हेत ।
सगुन पात्र कौं कूपहूं, मिलतही जीवन देत ॥४३७॥
गुन सनेह जुत होतु है, ताही की छबि होत ।
गुन सनेह के दीप की, जैसे जोति उदोत ॥४३८॥
सुनि सुख मोटी बात कौ, को चाहत कटु बात ।
चाखि दाख के स्वाद कौं, कौन निबौंरी खात ॥४३९॥

रस की कथा सुनीन तिहिं, कूर कथा की चाहि ।
जिन दाखे चाखी नहीं, मिष्ट निबौंरी ताहि ॥४४०॥
प्रेमी प्रीत न छांडही, होत न प्रन तैं हीन ।
मरे परेहू उदर में, ज्यौं जल चाहत मीन ॥४४१॥
अति उदारता बडन की, कहा लौं बरनै कोय ।
चातिंक जाचै तनक घन, बरस भरे घन तोय ॥४४२॥
बडे जु चाहैं सो करैं, करन मतौ उर धारि ।
हरि गिर तारे जलधि पर, करी सिला तैं नारि ॥४४३॥
अवसर बीते जतन कौ, करिबौ नहि अभिराम ।
जैसें पानी बह गये, सेत बंध किहिं काम ॥४४४॥
दुष्ट संग बसिये नहीं, दुख उपजत इहिं भाय ।
घसत बंस की अगिन तैं, जरत सबै बनराय ॥४४५॥
करै अनादर गुननि कौ, ताही सभा छंबि जाय ।
गज कपोल शोभा मिटत, ज्यौं अलि देत उडाय ॥४४६॥
कहूं कहूं गुन तें अधिक, उपजत दोष सरीर ।
मधुरी बानी बोलि कै, परत पिंजरा कीर ॥४४७॥
भले बुरे निब हैं सबै, महत पुरुष के संग ।
चंद्र सांप जल अगिन ए, बसत संभु के अंग ॥४४८॥
बिना कहे हैं सत पुरुष, पर की पूरैं आस ।
कौन कहत है सूर कौं, घर घर करत प्रकास ॥४४९॥
कछु कहि नीच न छेंडियै, न कछू नीच कौं संग ।

पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारे अंग ॥४९०॥
हीन जानि न बिरोधिये, बह तौ तन दुखदाय ।
रजहू ठोकर मारिये, चढ़ै सीस पर आय ॥४९१॥
नाहि व.रत उपकरन तें, काज सिद्ध बलवान ।
मुनि बन बसिबौ संग मृग, किये अगस्त दधि पान ॥४९२॥
बिना दिये न मिलै कछु, यह समझै सब कोय ।
होत सिसिर में पात तरु, सुरभि सपल्लव होय ॥४९३॥
यह निहचै करि जानियै, जान हार सो जाय ।
गज के भुक्त कपित्थ के, ज्यौं गिर बीज बिलाय ॥४९४॥
दूर कहा नियरै कहा, होनहार सो होय ।
धुर सींचे नालेर के, फल में प्रगटै तोय ॥४९५॥
आये आदर ना करै, पीछे लेत मनाय ।
घर आये पूजे न अहि, बांबी पूजन जाय ॥४९६॥
कहूं अनादर पाय के, गुनी न करहु अंदेस ।
मुद्रा है तौ करहिंगे, सब कोऊ आदेस ॥४९७॥
अपने अपने समय पर, सब कौ आदर होय ।
भोजन प्यारौ भूख में, तिस में प्यारौ तोय ॥४९८॥
होय सो होय हिसाब सौं, बिन हिसाब नहिं होय ।
भूखे वदन तैं अन्न मन, भखे नाक तैं कोय ॥४९९॥
जिह डर डर करियै जतन, उपजत सुर अमेट ।
लगै दूरवती चोट ज्यौं, होति कनौडे भेट ॥४६०॥

मीठी कोऊ बस्तु नहीं, मीठी जाकी चाहि ।
अमली मिसरी छाडि कै, आफू खातु सराहि ॥ ६१॥
बडी बडाई नीच कौ, दीजै अपने काम ।
खरहू कौं बोलत पथिक, कहत बिनायक नाम ॥४६२॥
कहा भयौ जो नीच कौं, देत बडाई कोय ।
कहत बिनायक नाम पैं, खर न बिनायक होय ॥४६३॥
भले बुरे कौ जानबौ, जान बचन के बंध ।
कहे अंध कौं सूर इक, कहे अंध कौं अंध ॥४६४॥
जानि बूझि कै करत नर, अपने हेत अहेत ।
झूठी साची बात पर, दोऊ मुचुलका देत ॥४६५॥
चिरजीवी तमहू तजै, जाको जग जस बास ।
फूल गये हूं फूल की, रहै तेल में बास ॥४६६॥
बहुत भए किहिं काम के, भार निबाहक एक ।
सेष धरै धर सीस पर, मेंडक भखी अनेक ॥४६७॥
वृद्धि न ह्वै है पाप तै, वृद्धि धरम तै धार ।
सून्यौ न देख्यौ सिंह के, मृग कौ सौ परवार ॥४८६।
देखत कौन्यो कछु नहीं, मुख हल भल की प्रीति ।
मृगतृष्णा में होति है, ज्यौं जल की परतीति ॥४६९॥
ऊपर दरसे सुमिल सी, अंतर अनमिल आंक ।
कपटी जन की प्रीति है, खीरा की सी फांक ॥४७०॥
निबल सबल के परस तैं, सबलन सौ अनखात ।

हनत हिमायत की गधी, ऐराकी को लात ॥४७१॥
दोष लगावत गुनिन कौं, जाकौ हृदै मलीन ।
धरमी को दंभी कहैं, छमी न कौं बलहीन ॥४७२॥
द्वै ही गति है बडन की, कुसम मालती भाय ।
केसव के सिर पर रहै, कै बन माहिं बिलाय ॥४७३॥
सब बिधि डरियै दुष्ट सौं, रहियै जतन समेत ।
शंभु सुधाकर सिर धर्‍यौ, विष बिषधर कै हेत ॥४७४॥
खाय न खरचै सूम धन, चोर सबै ले जाय ।
पीछै ज्यौं मधु मच्छिका, हाथ मलै पछताय ॥४७५॥
जगत बहुत जन तदपि मन, बिन सज्जन अति दीन ।
ससि तारानि सहै तऊ, रबि बिन नलिन मलीन ॥४७६॥
कोऊ कहै न जानियें, जोति वंत सुनि कोय ।
हाथ दिया लै देखियै, ऐसी आगन होय ॥४७७॥
खल निज दोष न देखई, पर के दोषहि लागि ।
लखै न पग तर सब लखै, परबत बरती आगि ॥४७८॥
जैसौ जैसौ अधिक गुन, तैसौ होय मिलाय ।
आहि उर विष गल अनल चख, शिव ससि सीस बसाय ॥४७९॥
भाग हीन कौं देवहू, देत सुलेत बनैन ।
दीठ परै जहां बस्तु तहां, चलै मूंद कै नैन ॥४८०॥
दिवस भलै बिगरै न कछु, रहौ नीची ते सोय ।
रावै चोरी करन कौं, चोर आंधरौ होय ॥४८१॥

दान दीन कौं दीजियै, मिटै दरद की पीर ।
औषध ताकौ दीजियै, जाके रोग सरीर ॥४८२॥
सब सौं आगे होय कै, कबहु न करियै बात ।
सुधरै काज समाज फल, बिगरै गारी खात ॥४८३॥
आवत समै बिपाति के, सत्रु मित्र ह्वै जाय ।
दुहत होत बृछ बंधन कौं, खंभ मात कौं पाय ॥४८४॥
उत्तम बिद्या लीजियै, जदपि नीच पै होय ।
पऱ्यौ अपावन ठौर कौ, कंचन तजत न कोय ॥४८५॥
निहचै कारन बिपत कौ, किये प्रीति अबि संग ।
मृग के सुख मृगराज को, होत कबहु अंग भंग ॥४८६॥
ज्यौं बर आवत सत्रु ह्वै, सजन देतु सुख चाहि ।
ज्यौं काटै तरु मूल कोउ, छांह करत रह ताहि ॥४८७॥
ताकौ बुरो न ताकियै, जासौं जग ब्यौसाइ ।
छांह फूल फल देत तरु, क्यौं तिहि कटन कराइ ॥४८८॥
दुष्ट भाव हिय मुख मधुर, तासौं करहु न प्रीति ।
भीतर बिष पय घट भऱ्यौ, ताहि न छुइ इहि रीति ॥४८९॥
दुष्ट न छांडे दुष्टता, बडी ठौरहू पाय ।
तैसैं तजत न स्यामता, बिष शिव कंठ बसाय ॥४९०॥
बिन उद्यम मसलत किये, कारज सिद्ध न ठाय ।
रोग न जानत औषधि, जानै जाइ जो खाय ॥४९१॥
नृप अनीति के दोष तैं, चूकै मंत्र प्रयोग ।

करै कुपथता पुरुष कौं, उपजै क्यौं नहि रोग ॥४९२॥
कहा करै आगम निगम, जो मूरख समझैन ।
दरपन कौ दोष न कछु, अंध बदन देखैन ॥४९३॥
दया दुष्ट के चित्त में, कबहू उपजत नाहि ।
हिंसा छोडी सिंह यह, क्यौं आवै मन माहि ॥४९४॥
प्रीति टूटैहू सज्जन के, मन तैं हेत छुटै न ।
कमल नाल कौं तोरियै, तदपि सूत टूटै न ॥४९५॥
सज्जन के प्रिय बचन तैं, गातन ताप मिटाय ।
जैसें चंदन भीर तैं, ताप न तन कौ जाय ॥४९६॥
सजन बचन दुरजन बचन, अंतर बहुत लखाय ।
वे सब कौं नीकै लगैं, बे काहू न सुहाय ॥४९७॥
धन अरु गैंट जु खेल कौ, दोऊ एक सुभाय ।
कर में आवत छिनक में, छिन में करतैं जाय ॥४९८॥
प्रभु कौं चिंता सबन की, आपु न करियै नाहिं ।
जनम अगाऊ भरत है, दूध मात थन माहि ॥४९९॥
धन अरु जोबन कौं गरब, कबहू करियै नाहिं ।
देखत ही मिट जात है, ज्यौं बादर की छांहि ॥५००॥
नृपति चोर जल अनल तैं, धन कौं भय उपजाय ।
जल थल नभ में मास कौं, झख केहरि खग खाय ॥५०१॥
बडे बडे कौं बिपति तैं, निहचै लेत उधारि ।
ज्यौं हाथी कौं कीच तैं, हाथी लेतु निकारि ॥५०२॥

बडे कष्ट हूजे बडे, करे उचित ही काज ।
स्यार निकट तजि खोज कै, सिंह हनै गजराज ॥१०३॥
जिहिं जेतौ उनमान तिहिं, तेतौ रिजक मिलाय ।
कन कीडी कूकर दुकरं, मनभर हाथी खाय ॥१०४॥
बहुगुन श्रम तैं उच्च पद, तनक दोष तैं पात ।
नीठ चढै गिरपर सिला, ढारत ही ढरिजात ॥१०५॥
छोटे अरि कौं साधियै, छोटौ करि उपचार ।
मरे न मूसा सिंह तैं, मारे ताहि मंजार ॥१०६॥
बडे बडे सौं रिस करैं, छोटे सौं न रिसाइ ।
तरु कठोर तोरै पवन, कोमल तृन बच जाइ ॥१०७॥
सेवक सोंई जानियै, रहै बिपति में संग ।
तन छाया ज्यौं धूप में, रहै साथ इक रंग ॥१०८॥
बुरौ तऊ लागत भलौ, भली ठौर पर लैन ।
तिय नैननि नीकौ लगै, काजर जदपि मलैन ॥१०९॥
जोरावरहू कौं कियौ, बिधि बस करन इलाज ।
दीप तमहि अंकुस गजहि, जलनिधि तरनि जहांज ॥११०॥
दुष्ट रहै जा ठौर पर, ताकौ करै बिगार ।
आगि जहां ही राखियै, जारि करै तिहिं छार ॥१११॥
बिना तेज के पुरुष की, अवस अवज्ञा होय ।
आगि बुझे ज्यौं राख कौं, आनि छुवै सब कोय ॥११२॥
पाय प्रकृति बस कीजियै, करि बुधि बचन बिबेक ।

लष्टपुष्ट सौं एक कौ, यष्टमुष्ट सौं एक ॥५१३॥
नेह करति तिय नीच सौं, धन किरपन घर मांहि ।
बरसै मेह पहार पै, कै ऊसर बरसाहिं ॥५१४॥
जहां रहै गुनवंत नर, ताकी सोभा होत ।
जहां धरै दीपक तहां, निहचै करै उदोत ॥५१५॥
खाली तज पूरन पुरुष, जिहिं सब आदर देत ।
रीतौ कुंवा उंसारियै, ऐंच भन्यौ घट लेत ॥५१६॥
सब आसान उपाय तैं, तुरत फुरत फल देत ।
मथिअरनी तरु काठ ज्यौं, आगि प्रगटि करि लेत ॥५१७॥
जाकी प्रापति होय सो, मिलै आप तैं आय ।
पालै पोषै खग बचन, देहै कहा कमाय ॥५१८॥
खल सज्जन सूचीन के, भाग दुहूं सम भाय ।
निगुन प्रकासै छिद्र कौं, सगुन सु ढांपत जाय ॥५१९॥
तुला सुई की तुल्यता, रीति सजन की दीठि ।
गरुवे दिस कौं जाति है, हरुवे कौ दै पीठ ॥५२०॥
भले बुरे सौं एक सी, मूढनि कैं प्रतीति ।
गुंजा सम तोलत कनक, तुला पला की रीति ॥५२१॥
जिहिंदिस भय तिहिंदिसकबहूं, ना जइये करि चोज़ ।
गज तिहिं मग पग ना धरै, जहां सिंह कौ खोज ॥५२२॥
सिद्धि होतु कारंज सबै, जाके जिय बिस्वास ।
पूजत ऐपन कौ हथा, तिय जिय पूरै आस ॥५२३॥

बहुत द्रव्य संचै जहां, चोर राज भय होय ।
कांसे ऊपर बीजुरी, परति कहैं सब कोय ॥५२४॥
जानिबूझि अजगुत करै, तासौ कहा बसाय ।
जागत ही सोवत रहै, तिहिं को सकै जगाय ॥५२५॥
जंह तंह सजन नहि मिलें, गुन गरुवे जग माहिं ।
जोतिभरे पानिप भरे, प्रति गजमुक्ता नाहिं ॥५२६॥
विद्या बिन न बिराजहिं, जदपि सरूप कुलीन ।
ज्यौं सोभा पावैं नहीं, टेसू बास बिहीन ॥५२७॥
एकांहि भले सपुत्र तैं, सब कुल भलौ कहाय ।
सरस सुबासित वृच्छ तैं, ज्यौं बन सकल बसाय ॥५२८॥
गुरुमुख पढ्यौ न कहतुहै, पोथी अर्थ बिचारि ।
सो सोभा पावै नहीं, जार गर्भ जुत नारि ॥५२९॥
जाकौं बुधिबल होत है, ताहि न रिपु कौ त्रास ।
घन बूंदैं कहा करि सकै, सिर पर छतना तास ॥५३०॥
छमा खड्ग लीने रहै, खल कौ कहा बसाय ।
अगिनपरी तृनरहतु थल, आपहि तैं बुझि जाय ॥५३१॥
एकै थल बिश्राम कौ, सो तासौं छुट जाय ।
ज्यौं पंछी सुजहाज कौ, उडि उडि तहां बसाय ॥५३२॥
जिहिं जैसा अपराध तिहिं, तैसी दंड बखानि ।
थाप ककरिया चोर कौ, धन चोरहि जियहानि ॥५३३॥
ओछें नर कें पेट में, रहै न मोटी बात ।

आध सेर के पात्र में, कैसें सेर समात ॥५३४॥
चलिये पैंडे सांच के, सांई सांच सुहाय ।
सांचौ जरै न आग तैं, झूठौंहीं जरि जाय ॥५३५॥
झूठो मंत्र जौलौं रहै, करै जु मिलि जनदोय ।
भई छकानी बात तब, जानि जात सब कोय ॥५३६॥
गूढ मंत्र गारुवे बिना, कोऊ राखि सकै न ।
धात पात्र बिन हेम के, बाघि न दूध रहै न ॥५३७॥
बहुत न बीतै तनक धन, संचै सजन करै न ।
मनन हानि सुनि ऊपजी, थोरी चित्त धरै न ॥५३८॥
भिरत भार सबतैं उतरि, धीरहि पर ठहरांत ।
नीर निचानहि पाइये, ज्यों बीते बरसात ॥५३९॥
सीलकरम कुल श्रुतचतुर, पुरुष परिच्छा जान ।
ताडन छेदन कसन पन, इन तै कनक पिछान ॥५४०॥
जोपै जैसौं होय तिहिं, हित सौ मिलिहै आय ।
गिरी छहारी चोर कौ, साहाहि साह मिलाय ॥५४१॥
कबहू रन बिमुखौ भयौं, तऊ फिर लरै सिपाह ।
कहा भयौ काहू समैं, भाग्यौ तऊ बराह ॥५४२॥
कबहू प्रीति न जोरियै, जोर तोरियै नाहिं ।
ज्यौं तोरै जोरे बहुरि, गांठ परति गुन माहिं ॥५४३॥
अंतर तनक न राखियै, जहां प्रीति बिनहार ।
उर सौं उर लागै तहां, जहां रहतु है हार ॥५४४॥

निर्खत पलकन पारियै, सज्जन मुख की ओर ।
उदै अस्त लौं एक टक, चिवतु चंद चकोर ॥१४५॥
सेवक साहिब के बढै, बढै बडाई ओज ।
जेतो गहरी जल बढै, तेती बढै सरोज ॥१४६॥
आछे नर के चित में, प्रेम न पूर्यौ जाय ।
जैसें सागर कौ सलिल, गागरि में न समाय ॥५४७॥
जे न होंय दृढ चित्त के, तहां न रहै सटेक ।
ज्यौं कांचे घट में सलिल, नहिं ठहरतु छिनएक ॥५४८॥
रस पोषे बिनहीं रसिक, रस उपजावत संत ।
बिन बरसे सरसे रहैं, जैसें बिटप बसंत ॥५४९॥
मन भावन के मिलिन कौं, सुख कौं नाहिन छोर ।
बोलि उठै नचि नचि उठैं, मोर सुनत घनघोर ॥५५०॥
बिरही जन के चित्त कौं, नाहि रहतु बुधि भोग ।
थिर चर कौं बूझत फिरै, राघव सीता सोध ॥५५१॥
जहां सजन तहं प्रीति है, प्रीति तहां सुख ठौर ।
जहां पुष्प तहां बास है, जहां बास तहां भौंर ॥५५२॥
जो प्रानी परबस पर्यो, सो दुख सहत अपार ।
जूथ बिछोहो गज सहै, बंधन अंकुस मार ॥५५३॥
गुनी होय श्रम कष्ट करि, लहैं राज दरबार ।
बीध बंध मुक्ता सहै, तब उर हार बिहार ॥५५४॥
मनप्रसन्न तन चैन जहां, स्वेच्छाचार बिचार ।

संग मृगी मृग सुख सबै, बन बसि तृन आहार ॥१९१॥
रहनहार जाइ न बसत, तदपि जतन बिवहार ।
देखौ सबकै देखियै, काहे द्वार किवार ॥१९६॥
है पासे के दाब पर, कहा जीत कहा हारि ।
सारि उठै यौं चौक सौं, छक पौ उठे न सारि ॥१९७॥
सब कौं व्याकुल करतिहै, एक जठर की आगि ।
परै किलकिला जलधि मधि, जल जलचर डर त्यागि ॥१९८॥
उदर भरन के कारनै, प्रानी करत इलाज ।
नाचै बांचै रन भिरै, राचै काज अकाज ॥१९९॥
दुरभर उदर न दीन कौ, होतु न तन संताप ।
तौ जन जन कौ को सहत, तरजन गरजन ताप ॥१६०॥
उदर धरन नर तैं भलौ, रहा उदर तैं हीन ।
कबहू नाहिन होतु है, जन जन को आधीन ॥१६१॥
करी उदर दुरभरन भय, हर अरधंगी दार ।
जौन होय तौ क्यौं रहे, अब लौ तनय कुमार ॥१६२॥
भरतु पेट नट निरतकै, डरतु न करतु उपाय ।
धरतु बरत पर पाय अरु, परतु बरत लपटाय ॥१६३॥
एक एक कौ सत्रु है, जो जातैं बलवंत ।
जलहि अनल अनलहि पवन, सरप जु पवन भखंत ॥१६४॥
एक एक तैं देखियै, अधिक अधिक बलवंत ।
सेस धराधर गिर धरै, गिर धरि हरि भगवंत ॥१६५॥

देत न प्रभु कछु बिन दिये, दिये देत यह बात
लै तंदुल धन दुजहि सुनि, त्रिपत किये भखिपात ॥१६६॥
जथासक्ति हीं दै सकै, जो कछु जाके पास ।
ब्राह्मन कन चावर दिये, श्रीपति धन आवास ॥१६७॥
जोरावर की होति है, सब के सिर पर राह ।
हरि रुक्मनि हरि लै गयौ, देखति रही सिपाह ॥१६८॥
अगम पंथ है प्रेम कौ, जहँ ठकुराई नाहिं ।
गोपिनि के पाछै फिरे, त्रिभुवनपति बन माँहिं ॥१६९॥
बचन रतन का पुरुष के, कहे न छिन ठहराय ।
ज्यौं कर पद मुख कछप के, निकसि निकसि दुरजाय ॥५७०॥
कबहू झूठी बात कौं, जो करिहै पच्छपात ।
झूठे संग झूठौ परत, फिर पाछैं पछतात ॥५७१॥
कुलकुपुत्र किहिं काम कौ, तिहिं सुभ सोभा नाहिं ।
ज्यौं बकरी के कंठ थन, दूध न जल तिहिं माहिं ॥५७२॥
बिगरनवारी बस्तु कौं, कहौ सुधारै कौंन ।
डारै पय औटाय कै, मिसरी भोरे नौंन ॥५७३॥
काहू कौं हंसियै नहीं, हंसी कलह कौ मूल ।
हांसिहीं तैं है भयौ, कुल पांडव निरमूल ॥५७४॥
दुरजन गहत न सजनता, जतन करौ किन कोइ ।
जौपै जौ कौं रोपियै, कबहू सालि न होइ ॥५७५॥
जुग परतीति बढाइयै, रहियै सांचे होय ।

झूठे नर की सांचियै, साखि न मानै कोय ॥५७६॥
बडे बडाई के जतन, बहैं बिरद की लाज ।
भये चतुर्भुज चोर तैं, नृप कन्या के काज ॥५७७॥
है अजुक्त पै जुक्त है, करियै वहै प्रमान ।
ब्राह्मन सौं गुरुजननि सौं, हारे होत बखान ॥५७८॥
जामें हित सो कीजियै, कोऊ कहौ हजार ।
छल बल साधि त्रिजैकरी, पारथ भारथ वार ॥५७९॥
सुनियै सबही की कही, करियै स्वहित बिचार ।
सर्ब लोक राजी रहैं, सो कीजै उपचार ॥५८०॥
प्रापति के दिन होति है, प्रापति बारंबार ।
लाभ होतु ब्यौपार में, आन मंत्र अधिकार ॥ ५८१॥
अपरापति के दिनन में, खरच होतु अबिचार ।
घर आवतु है पाहुनौ, बिनज न लाभ लगार ॥५८२॥
दीन धनी आधीन है, सीस नवावत काहि ।
मान भंग की भूमि यह, पेट दिखावत ताहि ॥५८३॥
रूखे सूखे उदर कौं, भरै होतु संतुष्ट ।
ए मन लाख करोर के, पायैं तुष्ट न दुष्ट ॥५८४॥
एक एक के काम कौं, रचि राखे जगदीस ।
जैसें भरियै पेट कौ, निहुरै सब कौं सीस ॥५८५॥
भली किये ह्वैहै बुरी, देखो बिधि बिपरीत ।

भक्ति करी द्विज जमदगनि, अर्जुन करी अनीति ॥५८६॥
कहे बचन पलटै नहीं, जे सत पुरुष सधीर ।
कहत सबै हरिचंद नृप, भर्यौ नीच घर नीर ॥५८७॥
मति फिर जाय बिपत्ति में, रांव रंक इक रीत ।
हेमहिरन पाछैं गये, राम गंमाई सीत ॥५८८
जानहार सो जाय अरु, होनहार है आय ।
रावन तैं लंका गई, बसे बिभीषन पाय ॥५८९॥
अनउद्यम सुख पाइये, जो पूरब कृत होय ।
दुख कौ उद्यम कौ करतु, पावतु है नर सोय ॥५९०॥
प्यारी अनप्यारी लगै, समैं पाय सब बात ।
धूप सुहावै सीत में, सो ग्रीषम न सुहात ॥५९१॥
जन्मत ही पावै नहीं, भली बुरी कोउ बात ।
बूझत बूझत पाइये, त्यौं त्यौं समझतु जात ॥५९२॥
भलौ ज्ञान अज्ञान नहिं, है अज्ञान नहिं ज्ञान ।
भानु उयौ तौ तम नहीं, है तम उयौ न भान ॥५९३॥
सतपुरुषनि के उतरिकैं, होत नीच अधिकार ।
यह खटकत.रवि से असित, तम कौ जगत प्रचार ॥५९४॥
हरबी गरुवे के हिये, ठहराति नाहीं बात ।
तुंबी जल में दाबिये, ज्यौं ऊपर ही आत ॥५९५॥
पावत बहुत तलास तैं, कर तैं छूटी बात ।
आंधी में टूटी गुडी, को जाने किस भात ॥५९६॥

पिय के बिछुरे बिरह बस, मन न कहूं ठहरात ।
धरनी गिरतु बिचहीं, फिरतु पर्यौ बबूरे पात ॥५९७॥
होत अधिक गुन निबल पै, उपजतु बैर निदान ,
मृग मृगमद चमरी चमर, केत दुष्ट हत प्रान ॥५९८॥
आप तरे तारे अवर, काठ नाव चित चाव ,
बूडे बोरे अँवर को, ज्यौं पाथर की नाव ॥५९९॥
जूवा खेले होतु है, सुख संपति कौ नास ।
राज काज नल तैं छुट्यौ, पंडव किय बन बास ॥६००॥
सरस्वति के भंडार की, बडी अपूरब बात ।
ज्यौं खरचे त्यौं त्यौं बढै, बिन खरचे घटि जात ॥६०१॥
यह अनखौंही बात पर, को नैं देखि अनखात ।
नकटी बूची ईकनयनि, पान खाति मुसकात ।६०२॥
देखादेखी करत सब, नाहिन तत्व बिचार ।
याकौ यह अनुमान है, भेड चाल संसार ।६०३॥
काज बिगारतु और कौ, इक निज काज सुधारि ।
कियौ मंत्रनि मिलि राजनृप. सुरथहि दियौ निकारि ॥६०४॥
काज बिगारतु आपनौ, एक और के काज ।
बलहि निबारत नैन की, हानि सही कबिराज ।६०५।
एक आपनौ और कौ, साधत कांज सतोल ।
अंगद अपने राम कौ, कीनौ सभा सबोल ॥६०६॥
एक बिगारतु आपनौ, और परायौ काज ।

रावन को अरु आपनो, कियौं घननाद अकाज ॥१०७॥
देखत कौ सुंदर लगै, उर में कपट बिषाद ।
इंद्रायन के फलन सम, भीतर कटुक सवाद ॥१०८॥
बिरह पीर व्याकुल भए, आयौ प्रीतम गेह ।
जैसैं आवतु भाग तैं, आग लगै पर मेह ॥१०९॥
खरचत खाति न जातु धन, औसर किये अनेक ।
जातु पुन्य पूरन भये, अरु उपजै अबिवेक ॥११०॥
चलै जु पंथ पपीलका, समुद्र पार ह्वै जाय ।
जौ न चलै तौ गरुडहू, पैंडहु चलै न पाय ॥१११॥
एक एकै अच्छर पढै, जानै ग्रंथ बिचार ।
पैंड पैंड हू चलत जो, पहुँचै कोस हजार ॥११२॥
भले बुरे हू सौं करत, उपकारी उपकार ।
तरबर छाया करतु है, नीच न ऊंच बिचार ॥११३॥
सजन करत उपकार कौं, बित माफिक जग मांहि ।
गहरे गहरी छाहँ तरु, बिरले बिरली छांहि ॥११४॥
बिन देखे जाने परैं, देखै जहां निसान ।
दीप धरै धन लाख पर, कोर ध्वजा फहिरान ॥११५॥
भले बंस कौ पुरुष सो, निहुरै बहु धन पाय ।
नवै धनुष सदबंस कौं, जिहिं द्वै कोटि दिखाय ॥११६॥
एक एक सौं लगि रहे, अन्नोदक संबंध ।
चोली दामन ज्यौं रच्यौ, जगत जंजीरा बंध ॥११७॥

नेगी दूर न होतु है, यह जानौं तहकीक ।
मिटत न ज्यौं क्यौं हूं किये, ज्यौं हाथन की लीक ॥६१८॥
चिदानंद घट मैं बसै, बूझत कहां निवास ।
ज्यौं मृगमद मृगनाभि में, ढूंढत फिरतु सुबास ॥६१९॥
कै सम सौं कै अधिक सौं, लरियै करियै बाद ।
हारे जीते होतु है, दोऊ ५ भांति सवाद ॥६२०॥
सज्जन सौं रस पोखियै, त्यौं त्यौं बढत हुलास ।
जेतौ मीठौ बस्तु में, तेतौ अधिक मिठास ॥६२१॥
करियै सभा सुहाव तौं, मुख तैं बचन प्रकास ।
बिन समझै सिसुपाल के, बचन न भयौ बिनास ॥६२२॥
जासौं पहुंचि न आइयै, तासौं बहसि न ठानि ।
गई प्रतिष्ठा करन की, फिर न बसे पुर आनि ॥६२३॥
सब काहू की कहत है, भली बुरी संसार ।
दुरजोधन की दुष्टता, बिक्रम कौ उपकार ॥६२४॥
जोति सरूपी ही सबै, सब सरीर में जोति ।
दीपक धरियै ताक मैं, सब घर आभा होति ॥६२५॥
बै समान रुचि होति है, रुचि प्रमान मन मोद ।
बालक खेल सुहाव ही, जो बन बिषै बिनोद ॥६२६॥
दान मान सनमान अरु, अपनी अपनी बानि ।
छोटे छोटी गति कही, मोटे मोटी मानि ॥६२७॥
भले बुरे दोऊ रहौ, चिरंजीव संसार ।

जिनतें गुन अरु दोष की, जान्यौ परतु बिचार ॥१२८॥
सरस निरस तर होतु है, समे पाय सब कोइ ।
दिन में परमप्रकास रबि, चंद मंद दुति होइ ॥१२९॥
बांके नर तैं होत है, बंदनीक सबकोय ।
नमत दुतीया चंद कौं, पूरन चंद न कोय ॥१३०॥
करियै जहा पैसार तहां, जो जानियै निसार ।
चक्रव्यूह अभिमन्यु कौ, सुन्यो सबन संसार ॥१३१॥
अधिकअधिक बनफोरिकै, बंस हत्यौ ब्रजराज ।
चढतें चढतें मोल ज्यौं, दरसैं बसन बजाज ॥१३२॥
पुरुष बचन तैं रोष हित, कोमल बचन समाज ।
रजक पछान्यो कूबरी, राखि लई ब्रजराज ॥१३३॥
सुदृढ ~~सूरन चले~~ चलै, कायर लगि रनघात ।
देवल डिगें न पवन तैं, जैसे ध्वज फहरात ॥१३४॥
मित्र मित्र के काम कौं, देतु बिभव करि हेत ।
जैसें चंद प्रकास करि, रबि मंडल तें केत ॥१३५॥
तन धन हू दै लाज के, जतन करत जे धीर ।
टूक टूक ह्वै गिरत पै, नहि मुख फेरत बीर ॥१३६॥
भले बुरे गुरजन बचन, लोपत कबहु न धीर ।
राज काज कौं छांडि कै, चले बिपिन रघुबीर ॥१३७॥
बिपति समैहू देत हैं, सतपुरुषन के कामं ।
राज बिभीषन कौं दियौ, वैसी बिरियां रामं ॥१३८॥

लोकन के अपवाद कौं, डर करियै दिन रैन ।
रघुपति सीता परिहरी, सुनत रजक के बैन ॥६३९॥
भले भले बिधिना रचे, पै सदोष सब कीन ।
कामधेनु पसु कठिन मनि, दधि खारौ ससि छीन ॥६४०॥
जैसो कारन होतु है, तैसौ कारज थाप ।
कर सर धनु प्रानी हनत, कर माला हरि जाप ॥६४१॥
इन कौं मानुष जन्म दै, कहा कियौ भगवान ।
सुंदर मुख बोल न सकै, दै न समें धनवान ॥६४२॥
कहा कहौं बिधि की अबिधि, भूले परे प्रवीन ।
मूरख कौं संपति दई, पंडित संपति हीन ॥६४३॥
वह संपति किहिं काम की, जिन काहू पै होउ ।
नित्य कमावै कष्ट करि, बिलसै औरहि कोउ ।६४४।
नर भूषन सब दिन छमा, विक्रम अरि धन वेर ।
ज्यौं तिय भूषन लाज है, निलज सुरति की बेर ॥६४५॥
यों निबाह सब जगत कौं, रस रिस हेत अहेत ।
एक एक पर लेत है, एक एक कौं देत ॥६४६॥
तृनहू तें अरु तूल तैं, हरुवो जाचक आहि ।
जानतु है कछु मागि है, पवन उड़ावत नाहि ॥६४७॥
सेइय नृप गुरु तिय अनिल, मध्य भाग जग मांहि ।
है बिनास अति निकटतैं, दूर रहे फल नाहि ॥६४८॥
देखत है जग जातु है, तउ ममता सों मेल ।

जानतु हौं या जगत में, देखत भूली खेल ॥६४९॥
भले बुराई ते डरैं, राख्यो चाहै सोय ।
जानत हैं पै दुष्ट के, अवगुन कहत न कोय ॥६५०॥
गुन तैं अवगुन होतु हैं, लिखे मिटत नहिं अंक ।
बढ़ाति जात ज्यौं ज्यौं कला, त्यौं त्यौं ससि सकलंक ॥६५१॥
निसदिनखटकत तनकतृन, परे जु आंखनिमाहिं ।
तिन में सज्जन राखिये, सो छिन खटकतु नाहिं ॥६५२॥
सज्जन बचावतु कष्ट तैं, रहै निरंतर साथ ।
नैन सहाई ज्यौं पलक, देह सहाई हाथ ॥६५३॥
धनी होत निरधन बहुर, निरधन तैं धनवान ।
बडी होति निससीत ऋतु, ज्यौ ग्रीषम दिन मान ॥६५४॥
सबही कुल में होतु है, एक एक सरदार ।
गज ऐरावत सुर सुरप, तरवर में मंदार ॥६५५॥
जहां सनेही तहां रहत, भ्रमत भ्रमत मन आय ।
फिरत कटोरी मंत्र की, चौरी पैठ हू राय ॥६५६॥
प्रान पियारेके दरस, हिय तैं बढत हुलास ।
फैलत लगे बयारं तैं, ज्यौं फूलन में बास ॥६५७॥
सुनत श्रवन पिय के बचन, हिय बिकसै हित पागि ।
ज्यौं कदंब बरषा समें, फूलत बूंदनि लागि ॥६५८॥
ज्यौं ज्यौं छुटै अयानपन, त्यौं त्यौं प्रेम प्रकास ।
जैसे कैरी आंब की, पकरत पकै मिठास ॥६५९॥

चोरा चोंरी प्रीति के, कीने बढत हुलास ।
अति खाये उपजै अरुचि, थोरी बात मिठास ॥ ६६०॥
नीति अनीति बडे सहैं, रिस भरि देत न गारि ।
भृगुउर दीनी लात की, कीनी हरी मनु हारि ॥६६१।
रहै न कबहू दोष लखि, एक सदन के माहिं ।
एक म्यान में द्वै छुरी, जैसे मावै नाहिं ॥६६२॥
परधन लेत छिनाय इक, इक धन देत हसंत ।
सिसिर करतु पनझारतरु, गहरे करत बसंत ॥६६३॥
जोन परत किहिं बात में, तिहिं मनुहार न गारि ।
ऐसौ खेलन खेलियै, जाके जीतन हारि ॥६६४॥
गहत तत्व ज्ञानी पुरुष, बात बिचार बिचारि ।
मथनिहारि तजि छाछकौ, माखन लेतु निकारि ॥६६५॥
मात पिता के पक्ष के, पुरुष हि प्रगट प्रभाव ।
यामदग्नि में देखियै, सम रस बीर सुभाव ॥६६६॥
गुरु बच जोग अजोगहू, करियै भ्रम बिसराय ।
राम राज सुख छाडिकै, बनबासी भये जाय ॥६६७॥
ओछी मति युबतीन की, कहैं बिबेकं भुलाय ।
दसरथ रानी के बचन, बन पठये रघुराय ॥६६८॥
पूजनीक गुन तैं पुरुष, दरसन पूजन होय ।
यज्ञतिलक किय कृष्णकौं, छांडि बडे सब कोय ॥६६९॥
श्रवन करी त्यौं कीजियै, मात पिता की सेव ।

कांधे कांबर ले फिर्‍यौ, पूजे जैसैं देव ॥६७०॥
बडे जिती लघुता करैं, तिती बडाई पाय ।
काम करैं सब जगत के, ताते त्रिभुवनराय ॥६७१॥
अरि कै कर में दीजिये, अवसर कौ अधिकार ।
ज्यौं ज्यौं द्रव्य लुटाय है, त्यौं त्यौं जस बिस्तार ॥६७२॥
जा लाइक जिहिं होय सो, ताही ठौर मनोग्य ।
चंदेरी पति क्यौं बरै, रुक्मिनी श्रीहरिजोग्य ॥६७३॥
धन धरे कौं मिलनसुख, होत भरौसो नाहि ।
होय न होई चांदनी, जैसैं पावस मांहि ॥६७४॥
बडे भले सब लच्छ तैं, लहु बिन लछ के जोग ।
रामलछन धनु धरि बिपद, कहतु पारखी लोग ॥६७५॥
~~ता बिन सोहन काजसिद्धि~~, जासौं लागी बात ।
गुरु बिन होत न चौथ व्रत, दूलह बिना बरात ॥६७६॥
प्रभु सौं बात दुरीन तऊ, करियै अरज सुखेन ।
रुक्मिनि आतुरता लिखी, हरि कहा जानत हेन ॥६७७॥
कठिन कलाहूं आये है, करत करत अभ्यास ।
नट ज्यौ चालतु बरत पर, साधे बरस छमास ॥६७८॥
जो उपजै जैसौ कुलै, जिहिं कुल जोअभ्यास ।
छोटे मच्छहू जल तरैं, पंछी उडै अकास ॥६७९॥
विद्या लच्छमी पुरुष पै, होय नाही इक ठाव ।
नाहिन दुख सुख सौंति में, पिय पै एकही जाय ॥६८०॥

गुन प्रगटै अवगुन दुरै, जाके कमला साथ।
तिय मारी परहरी तऊ, कृष्ण त्रिलोकीनाथ ॥६८१॥
मिलै दियो पूरब जनम, नादियै न मिलै न सोइ।
कौन सयाने धन कियो, किंहिंअयान दियौ खोइ॥६८२॥
जाकी न्यौत जिमाइये, ताही की मनुहारि।
परनै सोई गाइये, बचनैं सुधारि सुधारि ॥६८३॥
निरस बात सोई सरस, जहाँ होय हिय हेत।
गारीहू प्यारी लगै, ज्यौं ज्यौं समधिन देत ॥६८४॥
जो जिहिं कारज में कुसल, सो तिहिं भेद प्रवीन।
नदप्रवाह में गज बहै, चढै उलट लघु मीन॥६८५॥
जो जैसे तिहिं तैसिये, करिये नीति प्रकास।
काठ कठिन भेदै भ्रमर, मृदु अरविंद निवास॥६८६॥
इन लच्छन तैं जानिये, उर अज्ञान निवास।
ऊंघै कथा पुरान सुनि, बिकथा सुनै हुलास ॥६८७॥
उर उछाव हित धरम सौं, असुभ करम की हानि।
मन प्रसन्न रुचि अन्न सौं, ज्यौं जुर छूटै जानि ॥६८८॥
जपत एक हरि नाम तैं, पातक कोटि बिलाय।
ऐसाहि कनिका आगि तैं, घास ढेर जरिजाय ॥६८९॥
जो समरथ सब बात में, तिहिं भजियै तजि संक।
करै रंक तै राव हरि, करै राव तैं रंक ॥६९०॥
गर्ब प्रहारी हरि सही, यामें नहिं संदेह।

जरे लंक के लाख जौं, लाख लाख के गेह ॥६९१॥
कहा बड़े छोटे कहा, जहां हित तहां चित लागि ।
हरि भोजन किय बिदुरघर, दुरयोधन कौं त्यागि ॥६९२॥
परजन सौं सौ मन करै, परहरि हरि सौं प्रीति ।
झूठे सौं माने हरष, अहो जगत बिपरीति ॥६९३॥
यहै अवधि अविवेक की, देखि कोन अनखाय ।
कागु कनक के पिंजरा, हंस अनादर भाय ॥६९४॥
मूरख कौं हित के बचन, सुनि उपजतु है कोप ।
सांपहिं दूध पिवाइ यै, वाके मुख बिष ओप ॥६९५॥
गुन गरुवे लघुता गहै, तिहिं सनमानत धीर ।
मंद तऊ प्यारो लगै, सीतल सुरभि समीर ॥६९६॥
बडो ठौर को लघु लहै, आये आदर भाय ।
मलयाचल की ज्यौं पवन, परसे मंद सुहाय ॥६९७॥
महिमा जुत कौं देत ही, लेतन तन सकुचाय ।
लेत भात जगन्नाथ को, नृप हू सीस चढाय ॥६९८॥
धन पूरन धनवान पै, बिन दीनन लहात ।
ज्यौं बिन बरसै सघन जल, छियौपियौ नाहिं जात ॥६९९॥
इक बिनमागे ही लहै, मागै एक कहै न ।
घन जल सर सरिता भरै, चातक चौंच भरै न ॥७००॥
बडेन की संपति सबै, लघु बिलसंत अनंत ।
दधिजलधिन घन जल धरा, धर जल जग बिलसंत ॥७०१॥

जिहि जेतौ निहचै तितौ, देत दई पहुंचाय ।
सक्कर खौरे कौं मिले, जैसे सक्कर आय ॥७०२॥
जिय संतोष बिचारियै, होय जु लख्यौं नबीस ।
खल गुर काच कथीर सौं, मानत रली गरीब ॥७०३॥
जथा जोग सब मिलत है, जौ बिधि लिख्यो अंकूर ।
खल गुर भोग गंवारनी, रानी पान कपूर ॥७०४॥
समै सार दोहानि कौं, सुनत होय मनमोद ।
प्रगट भई यह सतसई, भाषाबृन्द बिनोद ॥७०५॥